वर्ष 2025

अंक : 7

भारत सरकार

विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

सीमाशुल्क मुंबई अंचल II

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

तालुका- उरण, जिला- रायगड, महाराष्ट्र - 400 707

79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री विमल कुमार श्रीवास्तव, मुख्य आयुक्त द्वारा ध्वजारोहण एवं अधिकारियों को संबोधन

विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष : 2025-26 अंक : 7

संरक्षक

विमल कुमार श्रीवास्तव

मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-II

संपादक

बी. सुमिदा देवी

आयुक्त जनरल

मार्गदर्शक

यशोधन वनगे	विजय रिशी	गिरीधर जी पई	अनिल रामटेके	डॉ. कुन्दन यादव	ऋतु राज गुप्ता
प्रधान आयुक्त	आयुक्त	आयुक्त	आयुक्त	आयुक्त	आयुक्त

सह संपादक

अश्विनी आडिवरेकर

अपर आयुक्त, सीमाशुल्क

मुख्य पृष्ठ चित्र : जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण (जे. एन. पी. ए.) के सौजन्य से

सहयोग : टीना छाबड़ा, रुचि मिश्रा, शाश्वत सिंह, रूपेश एस सक्सेना

चित्र : आभार गूगल

योगेन्द्र गर्ग
विशेष सचिव एवं सदस्य
Yogendra Garg
Special Secretary & Member

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
राजस्व विभाग
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
कमरा नं0. 144, नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली–110001
Government Of India
Ministry Of Finance
Department Of Revenue
Central Board of Indirect Taxes & Customs
Room No.144, North Block, New Delhi-110001
Tel.: +91-11-23092628, Fax: +91-11-23092346
E-mail: y.garg@nic.in

योगेन्द्र गर्ग
विशेष सचिव एवं सदस्य

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि देश के प्रमुख सीमाशुल्क संस्थान जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा की विभागीय पत्रिका "शेवा कृति" के 7वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजस्व गतिविधियों के साथ साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना किसी भी संस्थान की आदर्श कार्यशैली को दर्शाता है।

मैं "शेवा कृति" के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देते हुए भविष्य में भी "शेवा कृति" के सतत प्रकाशन की कामना करता हूँ।

योगेन्द्र गर्ग
18.09.2025

योगेन्द्र गर्ग
विशेष सचिव एवं सदस्य

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

विमल कुमार श्रीवास्तव

मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

संरक्षक की कलम से...

'शेवा कृति' का 7वां अंक अपने रोचक लेखों, आकर्षक कलेवर और अपनी नवीन साज सज्जा के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। विभागीय पत्रिकाओं का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी को प्रोत्साहित करने के साथ साथ अपने साथियों के अंदर छिपी प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करना है। 'शेवा कृति' अपने इस उद्देश्य में पूर्णतः सफल रही है। चूंकि पत्रिका में अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी है और हिंदी ने सहजता और सुगमता से सभी के हृदय में अपनी विशेष जगह बनाई है, अतः हिंदी के माध्यम से संवाद और व्यवहार आसानी से किया जा सकता है। हिंदी हमारी राष्ट्रीय अखंडता का भी प्रतीक है।

'शेवा कृति' के इस अंक का प्रकाशन हर स्तर के विभिन्न भाषा-भाषियों द्वारा पूर्ण किया गया है जो कि हमारी एकता प्रदर्शित कर रहा है। मैं, पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

विमल कुमार श्रीवास्तव

मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

यशोधन अरविन्द वनगे

प्रधान आयुक्त, सीमाशुल्क

संदेश

यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन की विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' के 7वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

वर्ष 2025 का विशेष महत्व है क्योंकि हम राजभाषा विभाग की स्वर्णिम जयंती मना रहे हैं। यह अवसर हमें उस महान यात्रा की याद दिलाता है जिसमें हिंदी ने हमारे देश-प्रबंधन में विशिष्ट पहचान बनाई है और सरकारी कामकाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित की है। राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके उपयोग को बढ़ावा देने में अद्वितीय प्रयास किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी ने प्रशासनिक और सामाजिक क्षेत्रों में अपना पकड़ मजबूत की है। यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है और हमारी भाषाई विरासत को संरक्षित रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अपने रोज़मर्रा के सरकारी काम-काज में और अधिक बढ़ावा दें।

मैं 'शेवा कृति' के इस संस्करण की सफलता की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि इसका प्रकाशन हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और भी अधिक प्रोत्साहित करेगा।

यशोधन अरविन्द वनगे

प्रधान आयुक्त, सीमाशुल्क

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

विजय रिशी

आयुक्त, सीमाशुल्क

संदेश

'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल'।

अर्थात मातृभाषा की उन्नति से ही किसी राष्ट्र की उन्नति समझी जा सकती है। हिंदी हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा है। किसी भी राष्ट्र की मातृभाषा न केवल विचारों को सुगमता से आदान-प्रदान करने का साधन बल्कि उस राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, आचरण एवं संस्कारों की अभिव्यक्ति का भी द्योतक है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, अंचल II की वार्षिक पत्रिका 'शेवा कृति' के 7वें अंक का राजभाषा स्वर्ण जयंती के अवसर पर सफल सम्पादन किया जा रहा है। विभिन्न विधाओं एवं कार्यालयीन विवरणिका का यह समागम न केवल मनोरंजन का एक अनूठा साधन है बल्कि यह राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने का एक सर्वश्रेष्ठ प्रयास भी है। प्रकाशन एवं सम्पादन के इस शुभ अवसर पर मैं पाठकगण एवं प्रकाशन मंडल का आभार व्यक्त करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी पत्रिका अत्यंत सफल रहेगी।

विजय रिशी

आयुक्त सीमाशुल्क

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

गिरीधर जी पई

आयुक्त, सीमाशुल्क

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विभागीय हिंदी पत्रिका "शेवा कृति" का 7वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

"शेवा कृति" हमारे सीमाशुल्क परिवार में प्रतिभा और रचनात्मकता को दिखाने का एक बेहतरीन माध्यम है। यह पत्रिका हमें आपस में जोड़ने का काम करती है और एक-दूसरे के विचारों को समझाने में मदद करती है। पत्रिका के माध्यम से विभागीय परिवार को एक ऐसा मंच प्राप्त होता है, जहाँ अनुभवों, उपलब्धियों, और विचारों को साझा किया जा सकता है।

मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी पत्रिका के सतत प्रकाशन के लिए किए जा रहे निरंतर परिश्रम और समर्पण के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

साधुवाद।

गिरीधर जी पई

आयुक्त, सीमाशुल्क

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

अनिल रामटेके

आयुक्त, सीमाशुल्क

संदेश

राजभाषा हिंदी की सर्वश्रेष्ठता प्रदर्शित करने वाली जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, अंचल II द्वारा संपादित वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'शेवा कृति' के सातवें अंक के प्रकाशन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

हिंदी भारत की जनभाषा है अतः हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं संपर्क भाषा के रूप में उसकी व्यापकता बढ़ाना हमारा उत्तरदायित्व हो जाता है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी मातृभाषा एवं राजभाषा हिंदी को पूरा सम्मान दें एवं दैनिक जीवन में इस भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके इसकी सुदृढ़ता सुनिश्चित करें।

अंचल ।। की राजभाषा पत्रिका 'शेवा कृति' विविध विधाओं एवं गतिविधियों का एक अनूठा संग्रह एवं हिंदी प्रेमियों के लिए विचार व्यक्त करने का उपयुक्त मंच है। पत्रिका सफलता की शुभकामनाएं।

अनिल रामटेके

आयुक्त सीमाशुल्क

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

डॉ. कुन्दन यादव

आयुक्त, सीमाशुल्क

संदेश

जब हम राजभाषा हिंदी में काम करते हैं तो एक ही वक्त में चार प्रकार से कार्य कर रहे होते हैं। पहले हम अपने महान संविधान निर्माताओं की इच्छा का पालन करते हैं। दूसरा संघ सरकार के कर्मचारी होने के नाते संघीय आदेशों का पालन करते हैं। तीसरा भारतीय गणराज्य की एकता के सूत्र में राजकीय कार्यों के लिए निर्दिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं और चौथा अपने हर नोट और टिप्पणी पर सहजता महसूस करते हैं। हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है और वही समझा जाता है। इस वैज्ञानिक भाषा में भ्रम की अवस्था नहीं होती। इस संबंध में एक कविता याद आती है-

कह न पाया तय किया था जो कि कह कर के रहूंगा
कब तलक अभिधा के संप्रेषण से डर कर के रहूंगा
मेरी अंग्रेजी में सहजता सरलता तक रह न पाई
संवैधानिक थी विवशता राजभाषा याद आई
नौकरी के लिए अंग्रेजी भले ही सीख ली है
बोलता हूं जब ये लगता है कहीं से भीख ली है
कह गया मस्तिष्क जो कुछ आत्मा वह कह न पाई
संवैधानिक थी विवशता राजभाषा याद आई
व्याकरण सीखे सभी पर शब्द के गुंफन न आए
अंग्रेजी के जनित सब पदबंध परिवर्तन न आए
चुटकुलों पर भी हँसी पूरी तरह खुलकर न आई
अनुकरण करना पड़ा जब सभी ने ताली बजाई

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मुंबई सीमाशुल्क अंचल-II की हिंदी पत्रिका शेवा कृति का सातवां अंक प्रकाशित हो रहा है। मैं इस पत्रिका के सतत प्रकाशन व सफलता की कामना करता हूं तथा यथासंभव राजभाषा हिंदी में कार्य करने का आग्रह करता हूं।

डॉ. कुन्दन यादव
आयुक्त, सीमाशुल्क

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS
सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II
MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

ऋतु राज गुप्ता
आयुक्त, सीमाशुल्क

संदेश

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन की वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'शेवा कृति' का 7वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रतीक है एवं भावों को व्यक्त करने का प्रभावी एवं शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सरलता एवं सर्वग्राह्यता स्वीकार करते हुए हिंदी को 14 सितंबर 1949 में राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा संबंधी अनुदेशों का पालन करना हम सभी का कर्तव्य है। सीमाशुल्क मुंबई का यह अंचल भी हिंदी की उन्नति हेतु निरंतर प्रयासरत है।

'शेवा कृति', साहित्य एवं सीमाशुल्क में होने वाली गतिविधियों का एक सुंदर समागम है जहां कार्यालय में कार्यरत विभिन्न कर्मचारी एवं अधिकारी अपने भावों को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हैं। यह पत्रिका हिंदी को बढ़ावा देने के साथ-साथ अधिकारियों को कार्यालयीन कार्यों से इतर अपने भीतर छिपी कला को प्रदर्शित करने का एक मंच भी प्रदान करती है।

पत्रिका के संचालन एवं प्रकाशन हेतु अंचल के अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

ऋतुराज

ऋतुराज गुप्ता
आयुक्त सीमाशुल्क

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

वित्त मंत्रालय

MINISTRY OF FINANCE

राजस्व विभाग

DEPARTMENT OF REVENUE

केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड

CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

सीमाशुल्क मुंबई अंचल - II

MUMBAI CUSTOMS ZONE-II

बी. सुमिदा देवी
आयुक्त, सीमाशुल्क (जनरल)

संपादकीय

विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' का सातवां अंक आप सभी को सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में न केवल हमारे अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने विभिन्न विषयों पर दिए गए लेख, चित्र एवं कविताओं के माध्यम से योगदान देते हुए हमारा मनोरंजन किया है बल्कि पत्रिका में जेएनसीएच मुंबई II में विगत एक वर्ष में आयोजित कार्यक्रमों से भी अवगत करवाया है।

जैसा कि आप सब को ज्ञात होगा कि 26 जून 2025 को नई दिल्ली में राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह मनाया गया जिसमें माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा विभाग का उद्देश्य है कि देश का शासन नागरिकों की भाषा में चले और प्रशासन में भारतीय भाषाओं का उपयोग करके देश का आत्मसम्मान जागृत किया जाए। उन्होंने कहा कि हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सहचरी है।

सीमाशुल्क अंचल II में एक केंद्रीयकृत हिंदी अनुभाग कार्यरत है जिसमें अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से केंद्र सरकार के राजभाषा निर्देशों को लागू किया जा रहा है। कार्यालय अध्यक्षों के नेतृत्व में अनुवाद, निष्पादन, नीतियों का कार्यान्वयन एवं प्रशिक्षण कार्य सतत जारी है। वर्ष 2025-26 के लिए राजभाषा वार्षिक निरीक्षण कैलेंडर की स्थापना की गई और कुल 15 कार्य दिवसों में 35 अनुभागों का राजभाषा निरीक्षण एवं उनके कार्यों का द्विभाषीकरण हम सभी के लिए एक उपलब्धि से कम नहीं था।

मुझे आशा है कि हमारा यह 'सामूहिक प्रयास' आप सभी का ध्यान आकर्षित करने में सफल होगा और विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' आपके लिए उपयोगी एवं रोचक साबित होगी। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले वरिष्ठ अधिकारी और साथ ही राजभाषा अधिकारियों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके प्रयासों से यह प्रकाशन संभव हो सका। 'शेवा कृति' के इस अंक के संबंध में आप सभी की प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

बी. सुमिदा देवी
आयुक्त, सीमाशुल्क (जनरल)

अनुक्रम

क्रम	रचना	रचनाकार संकलकर्ता	पृष्ठ संख्या
❖	माननीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मंत्री का दौरा	रिपोर्ट	12
❖	यूरोपियन संसदीय प्रतिनिधिमंडल दौरा	रिपोर्ट	15
❖	फ्रेंच प्रतिनिधिमंडल दौरा	रिपोर्ट	16
❖	सीबीआईसी अध्यक्ष का दौरा	रिपोर्ट	17
❖	CARMA- संग्रह और निगरानी एप्लिकेशन लॉन्च	रिपोर्ट	18
❖	कर पहरी : कविता	विजय रिशी	19
❖	आलोचक और मिठाईवाला	डॉ कुन्दन यादव	20
❖	एक बेटे की चुप : कविता	अंकित गोयल	22
❖	राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के सरल उपाय	रूपेश एस सक्सेना	23
❖	ड्यूटी भी, दुलार भी, जब अफसर बनते हैं आदर्श पिता	विशाल मल्होत्रा	25
❖	मुंबई की कहानी	आयुषी मित्तल	26
❖	पशु जैसा व्यवहार दिखाया फिर कैसे	डॉ कुन्दन यादव	27
❖	जर्मनी की वृद्ध महिला : संस्मरण	डॉ विजय वर्धन पाण्डेय	28
❖	न्याय गाथा : कविता	हितेश कुमार 'मेघ'	29
❖	राष्ट्र की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति	अभिषेक कुमार	30
❖	गुनाहों का देवता ; गुनाहों का एक क्रम : समीक्षा	रुचि मिश्रा	31
❖	सरकारी दफ्तर और लंच टाइम : व्यंग्य	शाश्वत सिंह	32
❖	ज्योतिष और हम भारतीय - सरल उपाय	संगीता अधिकारी	33
❖	भूमि पूजन - आईसी.एस सुविधा	रिपोर्ट	34
❖	एक शाम उनके नाम : कविता	वेंकटेश मिश्रा	35
❖	मन अधीर : कविता	त्रिपुरारी सिंह	36
❖	महत्वपूर्ण राजस्व आँकड़े	रिपोर्ट	37
❖	जेएनसीएच टीआरएस स्टडी 2025	रिपोर्ट	38
❖	एकल अनुबंध मॉड्यूल संबंधित बैठक	रिपोर्ट	39
❖	विभागीय उपलब्धियां	रिपोर्ट	40
❖	हमारा पर्यावरण	गौरव कुमार	42
❖	गणतंत्र दिवस 2025 की झलकियां	रिपोर्ट	44
❖	हिंदी पखवाड़ा 2024	रिपोर्ट	45
❖	वंदे भारत : कविता	सुमित गर्ग	47
❖	अद्वैत का तट	सौरभ सिन्हा	48
❖	जेएनसीएच प्रयोगशाला : एक दृष्टि में	डॉ. विजय वर्धन पाण्डेय	49
❖	बेशक (गजल)	लक्ष्मी कुमारी	50
❖	इंस्टेन्ट लाइफ	निखिल गुप्ता	51
❖	कस्टम ऑडिट करने की चरणबद्ध प्रक्रिया	संगीता अधिकारी	52
❖	दिशाओं से दशाओं तक	टीना छाबड़ा	53
❖	जेएनसीएच महिला दिवस आयोजन	रिपोर्ट	54
❖	जेएनसीएच योग दिवस	रिपोर्ट	55
❖	सतर्कता जागरूकता अभियान 2024	रिपोर्ट	56
❖	स्वच्छता अभियान 2024	रिपोर्ट	57
❖	बच्चों का कोना	चित्रावली	58

अंतरराष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस 2025 का समारोह दिनांक 17.02.2025 को जेएनपीए टाउनशिप, उरण में आयोजित किया गया

विश्व सीमाशुल्क संगठन (WCO) ने अंतरराष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस समारोह के आयोजन के समन्वय की ज़िम्मेदारी मुंबई सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II को सौंपी है।

श्रीमती निर्मला सीतारामण, माननीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री ने वित्त मंत्रालय के अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ समारोह की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में मुंबई स्थित राज्य और केंद्र सरकार के वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों सहित लगभग 400 गणमान्य अधिकारियों ने भाग लिया।

सीबीआईसी ने अंतरराष्ट्रीय सीमाशुल्क सहयोग को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अंतरराष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस के अवसर पर माननीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री ने एक 'स्मृति चिन्ह' का अनावरण किया जो कि विश्व में भारतीय सीमाशुल्क की सशक्त भूमिका एवं सुरक्षित वैश्विक व्यापार पारिस्थितिकी बनाने में उसके योगदान को दर्शाता है ।

व्यापार सुगमता और सीमाशुल्क प्रक्रिया के डिजिटलीकरण के लिए 03 नई योजनाओं का उद्घाटन माननीय वित्त मंत्री एवं कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री के हाथों किया गया ।

एकल अनुबंध : इसका अर्थ है एक बॉन्ड। इस ई-पहल से व्यापार के लिए कई मैन्युअल बॉन्ड की आवश्यकता के स्थान पर एक डिजिटल बॉन्ड लागू हो जाएगा।

ऑटोमेटेड सीमाशुल्क रिफन्ड : इस डिजिटल पहल के द्वारा कागज आधारित रिफन्ड आवेदन और रसीद के स्थान पर सीमाशुल्क रिफन्ड के लिए ऑनलाइन आवेदन और रसीद प्रयोग में लाया जाएगा।

VEGA (विजन फॉर एक्सपीडीशिएस गुड्ज़ रिलीज़ ऑन अराइवल): अर्थात कारगो का तेज संचालन। इस पहल से चुनिंदा AEO के कार्गो को निरीक्षण के लिए उनके परिसर में तुरंत पहुँचाया जा सकेगा।

इसके साथ साथ करदाताओं को सीमाशुल्क प्रक्रियाओं को सुगम रूप से उपलब्ध कराने के लिए माननीय वित्त राज्य मंत्री द्वारा 'सीमाशुल्क मैनुएल 2025' के डिजिटल संस्करण का लोकार्पण किया गया। माननीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री एवं माननीय वित्त राज्य मंत्री ने चुने हुए अधिकारियों को 'डब्ल्यू सी ओ' योग्यता प्रमाणपत्र वितरित किए ।

यूरोपीय संसद की 'आंतरिक बाज़ार और उपभोक्ता संरक्षण समिति' (आईएमसीओ) के सदस्यों का जेएनसीएच, न्हावा शेवा दौरा

जेएनसीएच न्हावा शेवा में सीमाशुल्क अधिकारियों से चर्चा करते यूरोपियन यूनियन के सदस्य

यूरोपीय संसद की 'आंतरिक बाज़ार और उपभोक्ता संरक्षण समिति' (आईएमसीओ कमेटी) के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने 7 जनवरी, 2025 को जेएनसीएच, न्हावा शेवा का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य व्यापार, विनियामक सहयोग और उपभोक्ता संरक्षण में यूरोपीय संघ-भारत संबंधों को मजबूत करना था। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व श्री एंड्रियास श्वेब, वरिष्ठ सदस्य आईएमसीओ ने किया।

जेएनसीएच न्हावा शेवा के कन्टेनर स्कैनिंग डिविजन, सीईएसी का दौरा करते सदस्यगण

यूरोपियन संसद की आईएमसीओ कमेटी के सदस्यों द्वारा जेएनपीए के 'विशेष आर्थिक जोन' का दौरा

इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य सीमाशुल्क संचालन को आधुनिक बनाने तथा वैश्विक बाज़ार में चुनौतियों का समाधान करने के भारत के प्रयासों पर केंद्रित था। आधुनिकीकरण पहल के माध्यम से सीमाशुल्क क्षमता और विनियामक अनुपालन में सुधार लाने तथा संस्थागत संवाद, तकनीकी सहयोग को बढ़ाने के प्रयासों पर बल दिया गया।

फ्रेंच सीमाशुल्क प्रतिनिधिमंडल का जेएनसीएच न्हावा शेवा का दौरा

दिनांक 21.07.2025 से 25.07.2025 के दौरान फ्रेंच सीमाशुल्क महानिदेशालय ने जेएनसीएच न्हावा शेवा का एक अध्ययन दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल में श्री बेनोइट गोडार्ट, आंतरिक मामलों के प्रमुख एवं सुश्री एग्नेस लॉरेंट, अंतरराष्ट्रीय मामलों के उप प्रमुख थीं। प्रतिनिधिमंडल का माननीय मुख्य आयुक्त महोदय एवं आयुक्त (जनरल) द्वारा स्वागत किया गया। इस दौरान उन्होंने न्हावा शेवा में सीमाशुल्क की निकासी (क्लियरेन्स) से संबंधित गतिविधियों का अवलोकन किया। इसके साथ साथ प्रतिनिधिमंडल ने कन्टेनर स्कैनिंग डिविजन में स्कैनिंग गतिविधियों, एक्सपोर्ट असेस्मेंट केंद्र (CEAC), डीपी वर्ल्ड, पोर्ट रेलवे यार्ड का दौरा किया और अधिकारियों से चर्चा की।

फ्रेंच प्रतिनिधिमंडल के साथ माननीय मुख्य आयुक्त एवं अन्य आयुक्तगण

अध्यक्ष 'केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड' श्री संजय कुमार अग्रवाल जी का जेएनसीएच न्हावा शेवा दौरा

दिनांक 6.12.2024 को सीमाशुल्क अधिकारियों, सीपीडब्लूडी अधिकारियों एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में सीमाशुल्क भवन के 'एनेक्स भवन' के निर्माण हेतु अध्यक्ष महोदय के कर-कमलों से 'भूमि पूजन' किया गया।

सीमाशुल्क अधिनिर्णयन संग्रह और निगरानी एप्लिकेशन

CUSTOMS ADJUDICATION REPOSITORY AND MONITORING APPLICATION

(CARMA)

सीमाशुल्क मुंबई अंचल II में दिनांक 18.08.2025 को श्री विमल कुमार श्रीवास्तव, मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त महोदय ने रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण के उद्देश्य से 'कारण बताओ नोटिस' (SCNs) और 'ऑर्डर-इन-ओरिजिनल' (OIOs) की निगरानी के लिए CARMA- सीमाशुल्क अधिनिर्णयन संग्रह और निगरानी एप्लिकेशन लॉन्च किया, जो कि एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है ताकि मैनुअल रिकार्ड कीपिंग प्रक्रिया को स्वचालित किया जा सके। इसमें कारण बताओ नोटिस और मूल आदेशों के दोहराव से बचा जा सकेगा।

CARMA के माध्यम से 'व्यक्तिगत सुनवाइयों/PH' का बेहतर प्रबंधन किया जा सकेगा और लंबित राजस्व की शीघ्र वसूली सुनिश्चित की जा सकेगी । इसके द्वारा MIS मॉड्यूल के माध्यम से कस्टमाइज रिपोर्ट तैयार करने में भी सुविधा होगी।

कविता

कर प्रहरी

विजय रिशी
आयुक्त, सीमाशुल्क

खेतों में जैसे किसान अड़े, सीमा पर जैसे जवान लड़े,
लिए बड़े इरादे तैनात खड़े, हम राष्ट्र अर्थ-तंत्र की देहरी,
राजस्व संग्रह हेतु जागृत हरपल, कर्मठ सचल,
हरदम सजग, कार्यरत अविरल, हम देश के कर प्रहरी।

लक्ष्य हमारे व्यापार सुगमता, सुभीता, सरलीकरण,
करदाता समस्या निराकरण; साँझ, सबेरे हर दोपहरी,
चेहरा विहीन डिजिटल पद्धतियों में पारायण अविचल,
उपलब्ध रुचिर, व्यावहार मधुर , हम देश के कर प्रहरी।
खेतों में जैसे किसान अड़े, सीमा पर जैसे जवान लड़े,
लिए बड़े इरादे तैनात खड़े, हम राष्ट्र अर्थ-तंत्र की देहरी।

ना कोई भय, ना पक्षपात, केवल गुणवत्ता ही पैमाना है।
सत्यानिष्ठा के पहरों में, असंभव दुश्मन का घुस पाना है ।
प्रत्याभूत निष्पादन के आगे, स्वसुविधा कभी ना ठहरी,
चुनौती विभिन्न, नये तलचिह्न, हम देश के कर प्रहरी।
खेतों में जैसे किसान अड़े, सीमा पर जैसे जवान लड़े,
लिए बड़े इरादे तैनात खड़े, हम राष्ट्र अर्थ-तंत्र की देहरी ।

जब पड़े ज़रूरत प्रवर्तन की, ये कदम ना पीछे हट पायेंगे,
सूचना ढाँचे, आँकड़े विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अपनायेंगे।
सुनिश्चित अनुपालन हेतु अनुनय प्रथम निवारण आख़िरी।
चाक चोबस्त, निडर सतर्क, हर वक्त, हम देश के कर प्रहरी।
खेतों में जैसे किसान अड़े, सीमा पर जैसे जवान लड़े ,
लिए बड़े इरादे तैनात खड़े, हम राष्ट्र अर्थ-तंत्र की देहरी।

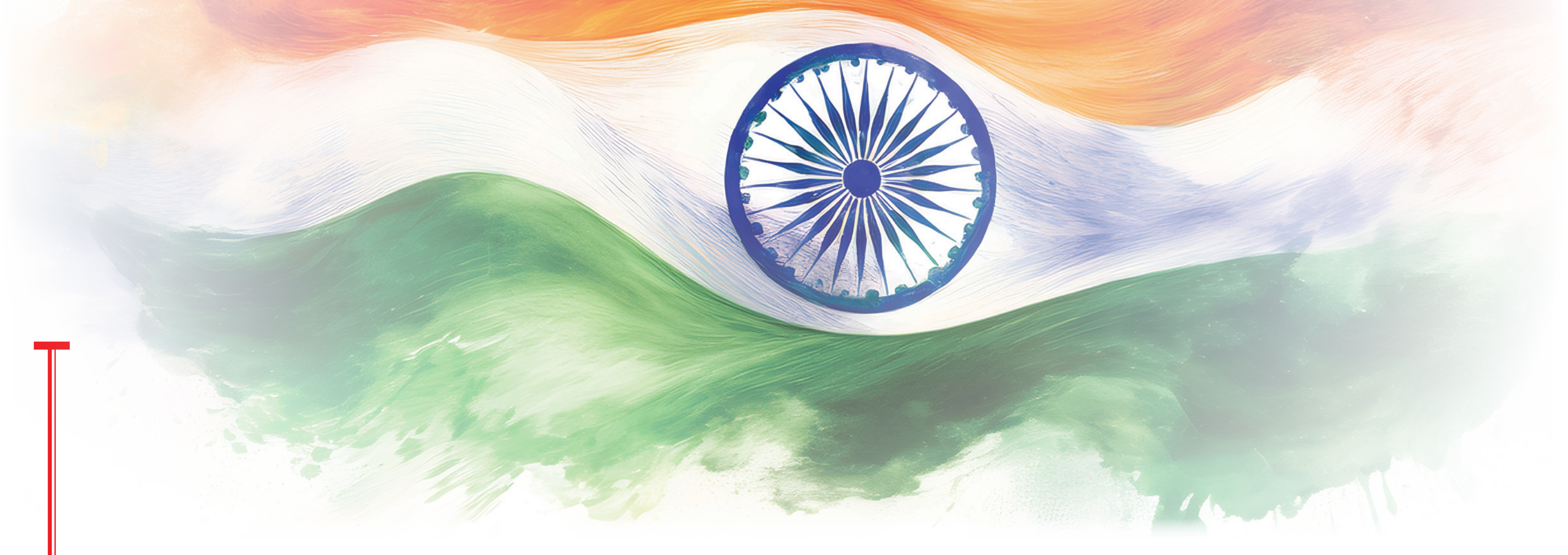

आलेख

आलोचक और मिठाईवाला

डॉ. कुन्दन यादव,
आयुक्त, सीमाशुल्क

प्रसिद्ध आलोचक प्रोफ़ेसर ज्ञानेन्द्र लगभग 15 मिनट से भी अधिक मूनलाइट मिठाई वाले की दुकान में काउंटर में सजी मिठाइयों को एक एक करके देख रहे थे। मिठाइयों का वर्गीकरण भी बड़ा अजीब था। एक भाग में सिर्फ़ बंगाली मिठाइयाँ है तो दूसरे में सिर्फ़ खोए की बनी पेड़ा, बरफी,कलाकंद आदि। इसके बाद बेसन से बनी मिठाइयाँ । आगे चलकर मैदे व घी से बनी बालूशाही और शकरपारे जैसी विभिन्न मिठाइयाँ रखी थी। सबसे अंत में ड्राइफ्रूट्स की मिठाइयाँ थी। इनके भी आगे सुगर फ्री सेक्शन इसके बाद नमकीनों का सेक्शन शुरू होता था। सामने की तरफ़ लाइव काउंटर अर्थात जलेबी, पकोड़ा, समोसा तुरंत ताज़ा खाए जा सकता हो। दो चक्कर के बाद तीसरा चक्कर मारते हुए प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र ने मिठाइयों की क़ीमतों की समीक्षा की और मन ही मन सोचा इससे क्रम पर सूजी या मूँग का देसी घी का हलवा बन जाता। मिठाइयों की ऊँची क़ीमत देखकर उनका साहस न हुआ कि कोई मिठाई टेस्ट करने के लिए वो माँग सकें। यह सब सोचते हुए वे कोने देखने के लिए जा ही रहे थे कि सफ़ाई कर्मचारी ने उन्हें टोक दिया ।

साहब दो मिनट जरा हट जाइए अभी पोछा लग रहा है। उसके बाद जलेबी बनेगी।

इंतज़ार करते करते प्रोफ़ेसर ने जलेबी बनाने वाले कारीगर से जलेबी का भाव पूछा। उसने बिना देखे ही बोल दिया- छह सौ रुपये किलो।

जलेबी की यह क़ीमत सुनकर ज्ञानेन्द्र लड़खड़ा से गए। बिहार में अपने क़स्बे में भी उन्होंने 100 रुपये किलो से ऊपर की ज़लेबी नहीं देखी थी।

आख़िर क्यों इतनी महँगी है जबकि मैदा, चीनी और गैस तीनों का लगभग भाव वही है जो बिहार में उनके शहर में था।

यह वस्तुस्थिति उन्हें अपनी कक्षा में विद्यार्थियों को पूंजीवाद समझाने में उपयोगी लगी।

इस बीच जलेबी छह सौ रुपये किलो की क़ीमत सुनकर वे वापस लड्डू के काउंटर पर आगे खड़े हो गए जहां चार सौ रुपये से लेकर सोलह सौ रुपये किलो तक के लड्डू उपलब्ध थे। 16 सौ रुपये किलो का लड्डू वास्तव में विभिन्न प्रकार के सूखे मेवों से बना हुआ पिंड भर था। उन्हें आपस में बाँधने के लिए शायद खजूर या किसमिस के पेस्ट का इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद गोंद पाक लड्डू, पंधारा लड्डू, मोतीचूर लड्डू , सूजी के लड्डू और अंत में बेसन का चिर परिचित 400 रू किलो जन सामान्य लड्डू।

ये जलेबी और लड्डू की उधेड़बुन में लगे हुए थे की एक और ट्रे मोतीचूर लड्डू की आई जिसकी बूँदी का आकार बड़ा व क़ीमत 800 रुपये किलो थी।

दुकान का मालिक भी अब प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र को लगातार देख रहा था। जब लगभग 20 मिनट हो गए तब उसने ज्ञानेन्द्र की ओर देखते हुए विनम्र भाव से पूछा भाई साहब क्या चाहिए?

प्रोफ़ेसर उसका सामना करने की स्थिति में शायद नहीं थे क्योंकि उनके चेहरे से महँगाई और आश्चर्य का प्रभाव साफ़ साफ़ देखा जा सकता था।

उन्होंने तुरंत फ़ोन पर बात करने का नाटक करते हुए पूछा- हाँ बताओ क्या ले लें? ताजे में तो जलेबी और लड्डू ही है। बाकी तो पुराना ही है सब। खैर तुम बताओ क्या लाएँ।

उन्होंने वाक्य पूरा किया ही था कि वो दुकान मालिक ने बोल दिया भाई साहब सारा माल ताज़ा है हमारा रोज़ का रोज़ बिक जाता है। उतना ही बनाते हैं जितना खप जाए। खैर आप क्या चाहते हैं?

वह और कुछ कहता इससे पहले ही प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र ने एक पाव लड्डू और एक पाव जलेबी का ऑर्डर दिया। और बोलते रहे हैं क्या बताए आजकल मिठाई भी ज़्यादा नहीं खा पाते हैं डॉक्टर ने मना किया हुआ है लेकिन दिल है कि मानता नहीं।

उनके स्पष्टीकरण पर दुकानदार ने कोई तवज्जो नहीं दी।
पैसे चुकाते हुए दुकानदार से उन्होंने पूछ लिया कि भाईसाहब आपके यहाँ मिठाइयाँ इतनी महँगी क्यों है? दूध घी चीनी मैदा गैस पूरे देश में लगभग एक ही भाव पर चल रहे हैं। या दुकान का किराया बहुत महँगा है या फिर कारीगरों का वेतन?
दुकानदार ने पलटकर जवाब दिया- न तो दुकान किराए पर है न ही कारीगर बहुत महँगे हैं। हमारे यहाँ सारा माल शुद्ध घी में तैयार होता है कोई मिलावट नहीं इसलिए दो पैसा तो लगेगा ही। आप क्या करते हैं?
यह जवाब सुनते ही प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र का मन हुआ तो बता दें कि जेएनयू में प्रोफ़ेसर हैं लेकिन अपनी वेशभूषा खासकर सरोजनी नगर से खरीदे फुटपाथ वाले पैजामे या लोवर और चप्पल को देखकर उनकी हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि उनके सामने ही कुछ देर पहले ही जेएनयू के एक प्रोफ़ेसर बकायदा प्रेस की हुई पैंट शर्ट में आए और चुपचाप तीन चार किलो मिठाइयाँ लेकर निकल गए।
प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र ने इतना ही कहा कि बस यहीं रहते हैं। अध्यापक हैं। जेएनयू गेट के सामने मुनीरका में बहुत से ऐसे लोग रहते थे जिन्हें PHD के बाद भी कहीं नौकरी नहीं मिली थी और वे इधर उधर ट्यूशन या किसी कोचिंग पढ़ाकर गुज़ारा करते थे। दुकानदार ने समझ लिया ये इनमें से ही एक है।
दुकान से निकलने के बाद प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र जेएनयू कैंपस के भीतर अपने आवास की तरफ़ चल पड़े। रास्ते भर इस उधेड़बुन में लगे रहे कि उन्हीं के समक्ष कोई प्रोफ़ेसर उसी दुकान से तीन चार किलो मिठाई बिना पूछे पैक करवा कर चला जाता है और लगभग उसी वेतनमान में वे आख़िर इतना मुआयना क्यों कर रहे थे?
उन्हें कुछ समझ में नहीं आया। घर पहुँचकर उन्होंने जलेबी और लड्डू के पैकेट जैसे ही रखे। बेटे ने ख़ुश होकर कहा- अरे वाह ज़लेबी। और एक टुकड़ा मुँह में डाल दिया। जलेबी में गर्माहट अभी बाकी थी। पत्नी का सोमवार व्रत था इसलिए उन्होंने जलेबी लड्डू दोनों से दूरी बना ली और झोली में से सिंघाड़े के आटे का पैकेट निकाल कर अपने लिए फलाहारी बनाने के कार्य में लग गई।
देसी घी में सिंघाड़े की पूरियों की सुगंध पाते ही बेटे ने मम्मी से कहा कि मम्मी रात में डिनर नहीं करूँगा बल्कि सोच रहा हूँ आपके साथ व्रत कर लूँ?
बच्चे का यह बाल सुलभ नटखट बहाना वात्सल्य से प्रोफ़ेसर ज्ञानेन्द्र को भिगो गया।
प्रोफ़ेसर ने टीवी चालू किया और फिर कुछ देर में नहा धोकर रात्रि भोजन के बाद पान खाने के लिए गंगा ढाबा की तरफ़ चले गए।
मौर्या बुक स्टाल पर वे कुछ नई पत्र पत्रिकाएं देख रहे थे तभी छात्रों का एक समूह फ़ीस वृद्धि का विरोध करते हुए वहाँ से गुज़रा। सरकार ने JNU में की फ़ीस को कई गुना बढ़ा दिया था इसको लेकर सभी छात्र विरोध में थे। वह जिस पार्टी से ताल्लुक़ रखते थे उसका कहना था कि यहाँ 30 साल तक लोग पढ़ने के नाम पर सरकारी ख़र्चे पर पड़े रहते हैं काम धंधा नहीं करते ऐसे में उनको बढ़ी हुई फ़ीस देनी चाहिए। यह बात कुछ हद तक सही थी क्योंकि बहुत से छात्रों की जीवनचर्या में महंगे मोबाइल लैपटॉप महंगे फ़ैशन डिजाइनिंग कपड़े आदि शामिल हो चुके थे। जहाँ पूरे हॉस्टल में बड़ी मुश्किल से दो चार मोटरसाइकिल दिखाई देती थी अब वही साईकिल दिखना दुर्लभ हो गया था। पहले जहाँ कैंपस में लोग पैदल एक जगह से दूसरी जगह जाते थे वहीं अब 5 सौ मीटर भी लोगों से चला नहीं जाता और ई रिक्शा का चलन हो गया था। विद्यार्थियों भी जीवन में विलासिता धीमे धीमे प्रवेश कर रही थी और वह इस हद तक भीतर घुस चुकी थी कि हॉस्टल मेस का भोजन पसंद नहीं आने पर जोमैटो और स्विगी से महंगे व्यंजन मँगाए जाने लगे थे। ऐसे में बढ़ी हुई फ़ीस बिलकुल जायज थी।
यह सब सोचते हुए प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र वापस अपने निवास की तरफ़ आ ही रहे थे कि सतलज हॉस्टल गेट के सामने किसी ने आवाज़ दी। रात के साढ़े 9 बज रहे थे और मेस के अधिकतर कर्मचारी काम निपटाकर अपने अपने घरों को जा रहे थे। इसी बीच एक कर्मचारी ने उन्हें नमस्कार किया
डॉक्टर साहब राम राम
राम राम और भाई नरेश जी कैसे हैं? बहुत दिन बाद दिखाई दिए?
सब ठीक है साहब, आप वार्डन होकर आ जाइए रोज़ मुलाक़ात होती रहेगी।
देखते हैं। मेरा भी मन है मिड कैंपस में आने का।
ठीक है डॉक्टर साहब फिर मिलते हैं कहते हुए उसने बचे हुए भोजन में से थोड़ी सामग्री पैक करके बाहर बैठे सफ़ाई वालों को दी।
सभी छात्रों और स्टाफ़ के खाने के बाद बचे हुए भोजन की उम्मीद लगाए हुए सफ़ाई कर्मचारियों के चेहरे की ख़ुशी ट्यूब लाइट की मंद रोशनी में कुछ और बढ़ चली थी।
प्रोफ़ेसर जानते थे कि जब भोजन बच जाता है तो मेस के कुछ कर्मचारी और सफ़ाई करने वाले लोग अपने घरों को ले जाते हैं। बाक़ी जूठन इकट्ठा करने के लिए भी कुछ लोग आते हैं जो उस जूठन से पशुओं का चारा बनाने का काम करते हैं। नरेश उन दिनों नया नया आया था जब प्रोफ़ेसर छात्र हुआ करते थे और आज क़रीब 30 साल बाद वह जबकि रिटायरमेंट की अवस्था में पहुँच चुका है उसी गर्मजोशी से प्रोफ़ेसर से राम राम करता है।
वे वहाँ से चलने ही वाले थे कि उनके अंतर्गत PHD कर चुके दो छात्र वहाँ से गुज़रे और उनको नमस्कार किया और रूक गए।
कैसे हो भाई रमेश? क्या रहा है?
सर ज़िंदगी चल रही है। आत्माराम कॉलेज में इंटरव्यू अच्छा हुआ है। दौलतराम और अंबेडकर में भी दिए थे, लेकिन वहाँ HRD मिनिस्टर का किसी के लिए फ़ोन आ गया था। फ़िलहाल तो ट्रांसलेशन वग़ैरह का काम मिल जाता है। उदय एक कोचिंग पढ़ाता है।
इधर कैसे आना हुआ?
सर आज महीने का अंतिम दिन है और मात्र 50 रुपये में भरपेट मिठाई सहित भोजन भला और कहाँ मिलेगा इसलिए हम लोग मंथ स्पेशल के दिन यही खाते हैं। आज तो दो दो मिठाइयाँ थीं।
लेकिन मैंने सुना है पेरियार का मंथ स्पेशल बहुत अच्छा होता है।
जी सर आप सही कह रहे हैं लेकिन यहाँ पर मैनेजर साहब शर्माजी वही है जो हम लोगों के समय में थे और लास्ट में बची हुई मिठाइयों में से दो चार एक्सट्रा भी दे देते हैं। हे हे हे। अच्छा सर चलते हैं।
यह कहते हुए वे दोनों मुनीरका अपने किराये के कमरे की तरफ़ निकल गए।
प्रोफ़ेसर साहब को चिरपरिचित कहावत याद आ गई कि जेएनयू से निकलकर कुछ लोग अमेरिका जाते हैं और कुछ लोग मुनीरका।
प्रोफ़ेसर साहब घर पहुँचे तब तक बेटा सो चुका था। जलेबी ख़त्म हो चुकी थी लेकिन लड्डू बचे हुए थे। उन्होंने एक लड्डू उठाया मेस कर्मचारियों, सफाईकर्मियों और उन पूर्व छात्रों को याद करते हुए

उसे धीरे धीरे खाया। उन्हें लगा कि लड्डू आज कुछ ज्यादा स्वादिष्ट हो गया है। क्योंकि उनके आस पास रहने वाले लोग अधिकतर लड्डू या जलेबी ही ख़रीदते हैं।
दो दिन बाद फिर वे सेंटर से उसी मूनलाइट दुकान पर पहुँचे। दुकान मालिक ने इनकी साफ सुथरी फॉर्मल वेशभूषा को कुछ ध्यान से देखा। वह कुछ बोलता कि प्रोफ़ेसर ने खड़े खड़े ऑर्डर दिया-
भैया एक- एक किलो लड्डू, पेड़ा, बर्फी और कलाकंद तौल दो। और फिर दुकानदार की तरफ़ मुख़ातिब हुए। तो चौधरी साहब हिसाब कितना हुआ? आपकी मिठाइयाँ वास्तव में स्वादिष्ट है।
दुकानदार ने कुछ अधिक चहकते हुए कहा सर कल आपने परिचय दिया नहीं। क्या कोई गलती...
अरे नहीं। गलती की कोई बात नहीं। परिचय क्या दूँ बताया भी था कि अध्यापक हूँ। खैर मेरा नाम प्रोफ़ेसर ज्ञानेन्द्र कुमार है। जेएनयू में स्कूल ऑफ़ लैंग्वेज में प्रोफ़ेसर हूँ।
दुकानदार ने कहा अरे सर आप प्रोफ़ेसर हैं। माफ़ कीजिएगा कल मैं समझ नहीं सका।
कल आपने सही समझा था कि मैं शायद मुनीरका में रहने वाला पूर्व छात्र हूँ। शायद संघर्ष के दिन चल रहे हैं इसलिए बार बार हर मिठाई का दाम पूछ रहा हूँ और सिर्फ लड्डू और जलेबी ही ले जा रहा हूँ। आपका अनुमान बिल्कुल सही था। दरअसल मैंने और मेरी तरह बहुत से जेएनयू के पूर्व छात्रों ने बेरोजगारी के दिनों में मुनीरका की इन्हीं गलियों में लम्बा वक्त गुज़ारा है। और उन्हीं दिनों का शायद प्रभाव है कि मैं और मेरे जैसे बहुत से छात्र बन्धु जब मिठाई की कल्पना करते थे तो काजू कतली या बादाम बर्फी नहीं लड्डू या पेड़े ही उनकी कल्पना में आते थे। इसीलिए कई बार ऐसा लगता है कि कम से कम लड्डू और जलेबी को इतना महँगा नहीं होना चाहिए। हमारे गांव में एक हलवाई थे जो गरीब जनता के लिए सस्ती मिठाइयाँ भी तैयार किया करते थे। काजू कतली की जगह मूंगफली कतली। अगर बाजार में बेसन महंगा है तो बाजरे का लड्डू। सत्तू का लड्डू गुड़ के साथ। लेकिन अब वह पीढ़ी और वह लोग चले गए। यह कहते ही लगभग कुछ पलों के लिए शांति सी छा गई।
जब ईश्वर की बनाई हुई मूनलाइट किसी से भेदभाव नहीं करती, तो चौधरी साहब की मूनलाइट में भी सबके हैसियत की मिठाई मिलनी चाहिए। यही मेरा विचार है। अपनी आलोचना दृष्टि का प्रयोग करते हुए उन्होंने सीधे सीधे यह बात कह दी।
यह सुनते ही दुकानदार काउंटर से प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र के पास आया और दोनों हाथों से पकड़ कर बोला-
सर आप इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर होकर भी छोटे से छोटे लोगों के लिए इतनी गहरी बात सोचते हो। मैं तो आपका फैन हो गया जी। आपने बिल्कुल सही कहा भगवान की मूनलाइट जब सबको मिलती है तो मेरी क्या हैसियत हम भी अपने मूनलाइट में सभी के लिए मिठाइयाँ रखेंगे। जब ज्ञानेंद्र चलने को हुए उसने किसी को आवाज दी अरे वह घेवर तैयार हुआ या नहीं डॉक्टर साहब के लिए आधा किलो पैक कर दे मेरी तरफ से। सर जी ले जाओ मेरी तरफ से आज आपने दिल जीत लिया।
प्रोफ़ेसर ज्ञानेंद्र ने पहले तो मना किया लेकिन उसकी आग्रह के अपनेपन को अस्वीकार न कर सके और मिठाई वाले को गले लगा लिया।

कविता

एक बेटे की चुप्पी

अंकित गोयल
कर सहायक

एक बेटा क़भी नहीं चाहता
कि वो अपने परिवार से दूर हो।
वो तो हमेशा
उनकी खुशी ही चाहता है।
माता-पिता बेटे की
बेरोजगारी और झुंझलाहट
तो देख लेते हैं,
पर उसकी आँखों की उदासी
और मन का प्रेम नहीं देख पाते।
उन्हें उम्मीद होती है
कि उनका बेटा बुढ़ापे की लाठी बने।
पर कई बार बेटे की परिस्थितियाँ
उसे ये मौका ही नहीं देतीं।
उसकी उदास आँखों में
प्रेम का समंदर होता है,
पर उसके शब्द
तानों के बाण से घायल हो
दिल में ही रह जाते हैं।
अपने ही परिवार की उपेक्षा,
उसे भीतर तक तोड़ देती है।

और धीरे-धीरे
उसका सारा उत्साह,
अपने ही घर से मुँह मोड़ लेता है।
एक बेटा
उम्मीदों की सूली पर रोज़ मरता है...
पर कह नहीं पाता –
'मैं कितना प्रेम करता हूँ...'

विशाल विन्यास वाले कार्यालयों में राजभाषा 'हिंदी ' का प्रयोग

-रूपेश एस. सक्सेना
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

(लेखक ने अपने निजी विचार व्यक्त किए हैं जिनका उद्देश्य सरकारी कामकाज में राजभाषाके प्रयोग को सुगमता से लागू करना है)

केंद्र सरकार ने राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए बहुत सी नीतियाँ बनाई हैं, पदों के सृजन किए गए हैं एवं जमीनी स्तर पर बहुत से व्यापक कार्य किए हैं ताकि राजभाषा को उसका वास्तविक स्वरूप एवं गरिमा प्रदान की जा सके जिसकी वह हकदार है । बनी बात है सरकार यह अपेक्षा करती है कि जन सामान्य के प्रयासों के साथ साथ सरकारी कार्यों में भी इसका अधिक से अधिक प्रयोग हो और हम इसके प्रसार हेतु निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। यह तो हुई एक सामान्य धारणा। सरकार जब अपनी उपरोक्त नीतियाँ तैयार करती है तो वह कार्यालय विशेष के लिए नहीं बल्कि समष्टिगत रूप से सभी कार्यालयों के लिए विचार करती है । यदि कोई विशाल विन्यास वाला या तकनीकी प्रकृति के कायों का निष्पादन करने वाला कार्यालय हो तो उसके लिए सरकार का प्रयास होता है कि वहाँ अधिक से अधिक राजभाषा अधिकारी हों या अनुवाद अधिकारी हों। आज हम इसी विषय पर चर्चा करेंगे और उदाहरण के तौर पर जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा कार्यालय को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास करेंगे कि राजस्व गतिविधियों के इस गढ़ में सरल से सरल उपायों के द्वारा हम सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रसार कैसे कर सकते हैं और सरकार द्वारा तय किए गए राजभाषा लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यालय का परिचयः जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन जहां से देश के प्रमुख सीमाशुल्क अंचल अर्थात मुंबई अंचल IIका संचालन किया जाता है वह वास्तव मे विशाल विन्यास वाला जोन है जिसमें कुल 07 आयुक्तालय निहित है और करीब 1600 अधिकारी विभिन्न पदों में अपनी सेवाएं देते हुए इन कार्यालयों का संचालन कर रहे हैं। स्पष्ट है कि इनमें कार्यरत अधिकतर अनुभागों में तकनीकी प्रकृति का कार्य होता है। अतः आज जिस विषय पर यहाँ पर चर्चा हो रही है उसके लिए जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन आदर्श उदाहरण है जिसमें आयात निर्यात में शुल्क से जुड़ी गतिविधियों का संचालन, सरकारी राजस्व नीतियों का कार्यान्वयन, शुल्क की उगाही, व्यापार संवर्धन, लेखापरीक्षा गतिविधियां, राजस्व आसूचना एवं अन्वेषण से जुड़ी गतिविधियां, स्टॉक होल्डर्स की साझेदारी, बंदरगाह से जुड़ी गतिविधियों में भागीदारी आदि शामिल हैं।

नियमः केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए महत्वपूर्ण नियम, व्यवस्थाएं स्थापित की गई हैं जिसमें राजभाषा अधिनियम 1963 के प्रावधान, राजभाषा नियम 1976 के 12 नियम, समय समय पर जारी संसदीय राजभाषा उपसमिति के निर्देश आदि सम्मिलित हैं। जिनके लिए हिंदी पदों का सृजन किया गया है और प्रशासनिक प्रधानों को निर्देश दिए गए हैं, प्रशिक्षण व्यवस्था की गई है, प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गई हैं। किन्तु इन सब के बावजूद बहुत से कार्यालयों में कार्य निष्पादन की प्रकृति तकनीकी होने के कारण या बहुत बड़े विन्यास वाले कार्यालयों में जहां एक निश्चित समय सीमा के अंतर्गत बहुत सारे कार्यों का निपटान किया जाना होता है, वहाँ सरकारी काम काज में हिंदी का प्रयोग उचित तरीके से नहीं हो पाता। यहाँ पर इस प्रकार की समस्या का हल निकालने का प्रयास किया गया है।

सरकारी कार्यों में राजभाषा से संबंधित सरकारी प्रावधान लागू करने के सरल उपाय

सबसे महत्वपूर्ण है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ साथ सभी उच्च अधिकारियों के मध्य सरकारी काम काज राजभाषा हिंदी में निपटाने को लेकर एक संवेदनशीलता का भाव होना। यदि उच्च अधिकारीगण राजभाषा के प्रयोग को लेकर संवेदनशील रहेंगे और यदि वो अपने से नीचे के अधिकारियों तक इस संवेदनशीलता को प्रेषित करते हुए उनको प्रेरित करते हैं या हिंदी के प्रयोग से संबंधित यदि वे कनिष्ठों को निर्देश देते हैं तो हिंदी के प्रयोग को निश्चित तौर पर बढ़ावा मिलेगा। उच्च अधिकारियों के साथ साथ कनिष्ठ अधिकारियों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सीमाशुल्क अधिनियम या अन्य सहयोगी अधिनियम के साथ साथ राजभाषा अधिनियम भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। जैसे आप किसी परीक्षा में बैठे तो सभी विषयों में उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है, उसी प्रकार राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमावली 1976 भी उतने महत्वपूर्ण हैं।

प्रत्येक तिमाही के उपरांत आवश्यक रूप से आगामी सप्ताह में नियमित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया जाये ताकि पिछली तिमाही की स्थिति की समीक्षा की जा सके और आगामी तिमाही की योजना बनाई जा सके। हिंदी की बैठकों में सभी अनुभागों के वरिष्ठ अधिकारी भाग लें ताकि सभी को राजभाषा के प्रति संवेदनशीलता जागृत हो सके।

कर्मचारियों के स्तर में बहुत से छोटे छोटे उपाय हैं जिनसे आसानी से हिंदी में सरकारी कार्य करने के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त

किया जा सकता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है कि सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड आधारित हिंदी टंकण सुविधा स्थापित करना जिससे कि फोनेटिक की बोर्ड के माध्यम से बहुत ही आसानी से बिना किसी प्रशिक्षण के हिंदी टंकण हो जाता है। आज कल के आधुनिक कंप्यूटरों में 'स्पीच टू टेक्स्ट' की सुविधा भी आ रही है। इसको इंस्टॉल करने के लिए मात्र टेक्स्ट एरिया में Windows key+H शॉर्टकट बना सकते हैं और आप बोल कर हिंदी टंकण कर सकते हैं।

कार्यालय में स्थापित हिंदी अनुभाग द्वारा प्रत्येक तिमाही में सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिये आवश्यक रूप से कार्यशाला का आयोजन करना, जिससे कि उनके अंदर हिंदी में सरकारी काम काज निपटाने में आने वाली झिझक एवं संकोच को दूर किया जा सके।

सभी अनुभागों में तैनात अधिकारियों के द्वारा आवश्यक रूप से सिस्टम में कार्यालय के नाम वाला हेडर एवं संबंधित फुटर को द्विभाषी रूप से तैयार करवा लिया जाए और उसका आवश्यक रूप से प्रयोग किया जाये। इस संबंध में कार्यालय द्वारा हिंदी अनुभाग की सहायता ली जा सकती है। हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का नाम हिंदी या द्विभाषी रूप में लिखें।

राजभाषा अनुभाग द्वारा समय समय पर प्रत्येक 06 माह में आंतरिक राजभाषा निरीक्षण किया जाना चाहिए और वहां होने वाले सभी नेमी (रोटीन) कार्य द्विभाषी रूप में परिवर्तित कर दिए जाये जिसमें विशेष रूप से धारा 3(3) के कागजात शामिल हों।

सभी जारी किए जाने वाले कागजातों में हस्ताक्षर आवश्यक रूप से हिंदी में करें ताकि इससे दूसरे सहकर्मी भी प्रेरणा ले सकें। यदि कोई प्रपत्र हिंदी में तैयार कर रहे हों या टिप्पणी लिख रहे हों और अंग्रेजी के किसी शब्द का हिंदी न आने की स्थिति में अंग्रेजी शब्द का लिप्यंतरण अर्थात उसे देवनागरी में ही लिख दें।

ई ऑफिस में कार्य करते समय ग्रीन नोट पर नोटिंग लिखने के उपरांत शीट के उपर 'कंठस्थ' सॉफ्टवेअर आधारित 'Translate' विकल्प का प्रयोग करें और अपनी टिप्पणी हिंदी में तैयार करें सकें ताकि हिंदी टिप्पण लेखन को बढावा मिले और भारत सरकार द्वारा हिंदी नोटिंग के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

अनुभागों द्वारा आवश्यक रूप से कर सहायकों द्वारा एक मास्टर फाइल खोली जाये या कंप्यूटर में बनाई जाये जिसमें अनुभाग में जारी किए गये सभी कागजातों की एक कॉपी उसमें रखी जाये ताकि सुलभ रूप से किसी भी कागजात को तुरंत प्राप्त किया जा सके और हिंदी की तिमाही तैयार करते समय उस फाइल से आँकडे प्राप्त किये जा सकें। इसके साथ साथ आवक रजिस्टर में या ईऑफिस में भी हिंदी में आये पत्रों की एंट्री अलग से की जाये ताकि रिपोर्ट में राजभाषा नियम 1976 के नियम संख्या 5 का उत्तर दिया जा सके।

सभी अनुभागों विशेष रूप से हिंदी अनुभाग से यह अपेक्षा की जाती है कि वे सरकारी प्रपत्रो में और अनुवाद के समय सरल एवं सुगम हिंदी का प्रयोग करें ताकि हिंदी का अधिक प्रसार किया जा सके।

उपरोक्त उपायों से निश्चित रूप से हिंदी के प्रयोग को बल मिलेगा और हम सरकार द्वारा तय राजभाषा लक्ष्यों तक आसानी से पहुंच सकते हैं। हमें जापान, जर्मनी, रूस, दक्षिण कोरिया जैसे देशों का उदाहरण अपने मस्तिष्क से नही हटाना चाहिये क्योंकि इन देशों ने विदेशों में भी अपनी राष्ट्रभाषा से कभी भी समझौता नहीं किया और अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा बोली। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी भी अब विदेशों में सभी राष्ट्राध्यक्षों से हिंदी में ही संवाद रहे हैं।

अंत में महात्मा गांधी जी का यह विचार हम सब को अपने मन में सदैव रखना चाहिये।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।"

सीमाशुल्क मुंबई II, न्हावा शेवा में हिंदी कार्यशाला में भाग लेते अधिकारीगण

आलेख

ड्यूटी भी, दुलार भी : जब अफसर बनते हैं आदर्श पिता

डॉ. विशाल मल्होत्रा
कर सहायक

भारतीय कस्टम विभाग में कार्यरत अधिकारी न केवल आर्थिक सुरक्षा और व्यापारिक अनुशासन के प्रहरी होते हैं, बल्कि वे राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा का भी अहम उत्तरदायित्व निभाते हैं। परंतु इन तमाम पेशेवर भूमिकाओं के समानांतर, एक भूमिका का और भी महत्व है जिसे वे बड़े धैर्य और गहराई से निभाते हैं—वह है पिता की भूमिका।

आज के बदलते सामाजिक और पारिवारिक संदर्भ में पिता केवल कमाने वाले नहीं हैं, वे अब बच्चों के जीवन में एक सजग, संवेदनशील और नैतिक मार्गदर्शक भी बन चुके हैं। विशेषकर उन अफसरों के लिए जिनका दिनचर्या तय नहीं होती, जिनका समय सीमित और अक्सर अनिश्चित होता है, उनके लिए अपने बच्चों के साथ गहरे और अर्थपूर्ण संबंध बनाए रखना आसान नहीं होता। फिर भी, वे इस कठिन चुनौती को साहस और संवेदना से निभाते हैं। कस्टम अधिकारियों की ड्यूटी में समय की कोई गारंटी नहीं होती। कभी रात्रिकालीन तलाशी, कभी आकस्मिक बंदरगाह दौरा, कभी सीमा चौकी पर दिनभर की ड्यूटी—इन सबके बीच जब वे घर लौटते हैं, तो एक नए किरदार में प्रवेश करते हैं। यह भूमिका वर्दी के अनुशासन से भिन्न होती है। अब वे एक कोमल, सुनने वाले, मार्गदर्शन देने वाले और अंदर ही अंदर प्रेरणा देने वाले पिता होते हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठता है—क्या इतने व्यस्त और तनावपूर्ण माहौल में एक अधिकारी अपने बच्चे के जीवन में गहराई से जुड़ सकता है? उत्तर है—हाँ, यदि उसका जुड़ाव मात्र समय पर आधारित न होकर, गुणवत्ता और उपस्थिति पर आधारित हो।

जब एक अधिकारी सीमित समय में भी अपने बच्चे से संवाद करता है, उसकी बातें ध्यान से सुनता है, जीवन के छोटे-बड़े विषयों में उसकी भागीदारी करता है, तो वह एक भावनात्मक सेतु निर्मित करता है। बच्चे को यह अनुभव होता है कि उसका पिता भले ही हर समय शारीरिक रूप से उपस्थित न हो, लेकिन भावनात्मक रूप से सदैव उसके साथ है।

स्थानांतरण, जो हर कस्टम अधिकारी के जीवन का अभिन्न अंग है, बच्चों के लिए अक्सर अस्थिरता और तनाव का कारण बन सकता है। परंतु कई अनुभवी अधिकारी इस चुनौती को अवसर में बदलते हैं। वे नए शहर को एक सीखने का माध्यम बनाते हैं, नई भाषा, संस्कृति और मित्रता को अपने बच्चों के लिए उत्साह और अन्वेषण का विषय बनाते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे आत्मनिर्भरता, अनुकूलनशीलता और सामाजिक विवेक जैसे जीवन कौशल सहज ही सीख जाते हैं।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है—आचरण द्वारा शिक्षा। जब बच्चा अपने पिता को ईमानदारी से काम करते देखता है, निर्णय लेते समय नैतिकता को प्राथमिकता देते देखता है, तब वह मौन रूप से यह सीखता है कि चरित्र केवल किताबों में पढ़ने की वस्तु नहीं, बल्कि जीने की शैली है। यह अवचेतन में अंकित होने वाली शिक्षा होती है, जो आजीवन उसके मूल्यों को प्रभावित करती है।

अधिकारियों का काम जितना गंभीर और चुनौतीपूर्ण होता है, उतना ही महत्वपूर्ण होता है घर लौटकर मानसिक रूप से उपलब्ध रहना। आज की तेज़ रफ्तार और डिजिटल दुनिया में शारीरिक उपस्थिति पर्याप्त नहीं है। जब एक पिता बच्चे के साथ होते हुए भी फोन में व्यस्त रहता है, तो वह अनजाने में बच्चे को यह संदेश देता है कि वह प्राथमिकता नहीं है। इसके विपरीत, जब वही पिता ध्यानपूर्वक बातें सुनता है, आँखों में आँखें डालकर संवाद करता है, तो वह एक ऐसा भावनात्मक निवेश करता है जो रिश्ते को स्थायित्व और गहराई देता है।

तकनीकी उपकरण जैसे वीडियो कॉल, साझा कैलेंडर या ऑडियो संदेश—इनका सही और सीमित उपयोग माता-पिता और बच्चों के बीच दूरी को कम करने में सहायक हो सकता है, बशर्ते इन्हें केवल विकल्प नहीं बल्कि पूरक के रूप में देखा जाए।

कुछ अधिकारियों की व्यक्तिगत कहानियाँ इस दिशा में प्रेरणादायक हैं। एक अधिकारी प्रतिदिन अपने बेटे को ऑडियो संदेश भेजते हैं, भले ही वे ड्यूटी पर हों। उनके अनुसार, यह मात्र संवाद नहीं, एक भरोसे की डोर है। एक अन्य अधिकारी ने अपने घर में पारिवारिक बैठक की परंपरा शुरू की है, जहाँ बच्चे खुलकर अपनी भावनाएँ और अपेक्षाएँ साझा करते हैं। ये छोटे प्रयास बड़े असर छोड़ते हैं।

कस्टम अधिकारी होने का अर्थ है राष्ट्र के लिए समर्पित होना। परंतु पिता होने का अर्थ है किसी छोटे से हृदय के लिए संसार बन जाना। दोनों भूमिकाएँ अलग हैं, परंतु दोनों में समानता यह है कि इनका असर दूरगामी और पीढ़ियों तक जाने वाला होता है।

इसलिए, जब एक अधिकारी सीमाओं की रक्षा करता है और साथ ही अपने बच्चे की भावनाओं की भी रक्षा करता है, तब वह केवल एक सफल अफसर नहीं बल्कि एक संपूर्ण पुरुष बनता है।

वह अपने बच्चों को केवल सुरक्षा नहीं, संस्कार भी देता है। और यही उसका सबसे बड़ा योगदान होता है—देश को न केवल आर्थिक रूप से मज़बूत बनाना, बल्कि नैतिक रूप से भी समृद्ध करना।

कविता

मुंबई की कहानी

आयुषी मित्तल
कर सहायक

भागती दौड़ती मुंबई की ये कहानी,
हर सुबह नई, मगर है वही पुरानी।
नींद से जंग और अलार्म की पुकार,
दोपहर से पहले ही थकता है हर यार।।
लोकल ट्रेन में ज़बरदस्त भीड़,
जिससे दुखती है सबकी रीढ़ ।
पर सबको बस जल्दी पहुंचना है,
समस्या सिर पर बड़ी गम्भीर ।।
सड़कों पर भयंकर ट्रैफिक जाम,
हर जगह किराए - छूते आसमान ।
पूरा हफ्ता इसी उम्मीद में गुजरता,
कि रविवार को मिलेगा आराम।।

तापमान साल भर लगभग समान,
'मानसून' की है अलग ही शान।
बादल यहां अपने मन से बरसे,
कोई संकेत नहीं देते – आंधी, तूफान।।
नाश्ते में, विकल्पों की भरमार,
जैसे पोहा, इडली, सैंडविच और चाट।
अतुल्य है मुंबई के दो मुख्य आकर्षण,
कटिंग चाय और तीखा वड़ा पाव ।।
छोटे और बड़े, हर पर्दे की ये महानगरी,
सितारों की चमक से भरी इसकी गगरी,
अमीर और गरीब, इसे दोनों पर अभिमान,
बांद्रा हो या धारावी, ये सबकी पहचान।।

एकता की यहां, मिले मिसाल,
हर धर्म बसे यहां, पर नहीं कोई बवाल
हो सिद्धिविनायक, या हो हाजी अली,
माउंट मेरी का चर्च, या गुरुद्वारे की गली।।
लाखों सपने यहां, हर रोज़ भरे उड़ान,
पूरे देश का ये शहर, पसंदीदा मेज़बान
तभी तो एक ही बात, कहे सबकी जुबान
आमची मुंबई, आमची जान।।

कविता

पशु जैसा व्यवहार दिखाया फिर कैसे

डॉ कुन्दन यादव
आयुक्त, सीमाशुल्क

मानव होकर बड़े भाग्य से जन्म लिया
पशु जैसा व्यवहार दिखाया फिर कैसे 1

मंदिर मस्जिद पूजा पाठ किया कितना
कुछ भी तेरे काम न आया फिर कैसे 2

गुंडे पीट रहे थे रिक्शेवाले को
तू चुपचाप खड़ा रह पाया फिर कैसे 3

दुर्घटना में तड़प रहे थे यात्री जब
मदद न देकर रील बनाया फिर कैसे4

देख रहे थे भीख माँगते बच्चे जब
तुमने छप्पन भोग चढ़ाया फिर कैसे 5

भूखा था जिस दिन परिवार पड़ोसी का
तीनों वक्त पकाकर खाया फिर कैसे 6

पेंशन खातिर भटक रहे उस बूढ़े को
तुमने दस दिन बाद बुलाया फिर कैसे 7

छेड़ रहे थे लड़की को आवारा सब
पौरुष तेरा काम न आया फिर कैसे 8

रोगी तो मर चुका था दो दिन पहले ही
तुमने रखकर लाश कमाया फिर कैसे 9

न्यायालय में हलफ उठाकर गीता की
आँखों देखा हाल छुपाया फिर कैसे 10

भाई ने पैबंद लगे कपड़े पहने
तुमने महँगा सूट सिलाया फिर कैसे 11

मानवता से बढ़कर कोई धरम नहीं
इतना पढ़कर समझ न पाया फिर कैसे 12

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन
निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
अँग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुण होत प्रवीण। पै निज
भाषा ज्ञान के रहत हीन के हीन॥
-भारतेन्दु हरिश्चंद्र

जिस देश को अपनी भाषा और
साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता।
-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

संस्मरण

हर जगह मौजूद हैं अच्छे लोग

"जर्मनी की वह देवतुल्य वृद्ध महिला"

डॉ विजय वर्धन पाण्डेय
सहायक रसायन परीक्षक

प्रायः हम टीवी न्यूज़ में यही देखते सुनते है कि आजकल का समय बहुत खराब हो गया है, कलयुग आ गया है, लोग बस अपना सोचते हैं, अपना फायदा देखते हैं, दूसरे से कोई मतलब नहीं है, अपने आप में ही व्यस्त, किसी की मदद नहीं करते, यहां तक की कुछ पूछने पर कोई जवाब भी नहीं देते। सच मे समय कुछ परिवर्तित हुआ है, पर अभी भी बहुत से लोगों के अंदर इंसानियत और अच्छाई की भावना है, विपरीत परिस्थितियों में वह आपकी मदद भी करते हैं, अच्छे लोगों से ही समाज और देश चल रहा है, कोई भोजन दान करता है, कोई कपड़ा, कोई किसी गरीब बिटिया की शादी मे मदद कर रहा है। आपके आसपास आप देखेंगे तो आप पाएंगे की अच्छे लोगों की कमी नहीं है, हर जगह आपको अच्छे लोग मिल जाएंगे। ऐसे ही एक घटना मेरे साथ भी हुई, वह भी देश के बाहर, विदेश में, जर्मनी देश में।

पीएचडी की पढ़ाई के दौरान मेरे एक रिसर्च कार्य के लिए मुझे 125वीं IUFRO (International Union of Forest Research Organizations) कॉंग्रेस में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इस कॉंग्रेस का आयोजन स्थल जर्मनी के फ्रीबर्ग (Freiburg) शहर था, मेरी फ्लाइट दिल्ली से फ्रैंकफ़र्ट (Frankfurt) तक की थी, फ्रैंकफ़र्ट से फ्रीबर्ग मुझे बस से जाना था, सभी टिकट (फ्लाइट, बस) एवं रहने खाने की व्यवस्था कांग्रेस समिति द्वारा की गई थी। साथ ही उन्होंने एक मैप भी दिया था की आप एयरपोर्ट से बस स्टेशन कैसे पहुचेंगे, परंतु सभी जानकारियाँ जर्मन भाषा में थी।

दिल्ली से फ्रैंकफ़र्ट एयरपोर्ट तक पहुँचने मे कोई दिक्कत नहीं थी, फ्रैंकफ़र्ट एयरपोर्ट पर मैं आराम से उतर गया था, हर जगह वाईफाई की सुविधा थी, मैं प्रसन्न होकर अपने दोस्तों, परिवार वालों को विडियो कॉल करके सब कुछ बता रहा था कि अभी एयरपोर्ट पर उतर गया हूँ और उनको एयरपोर्ट की सुंदरता दिखाने लगा। फ्लाइट के लैंडिंग टाइम और बस के प्रस्थान समय (departure टाइम) मे बहुत ज्यादा समय का अंतर नहीं था, अतः मैं जल्दी से एयरपोर्ट से बाहर निकल गया।

एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही मुझे परेशानी होनी शुरू हो गयी, क्योंकि मैंने कोई इंटरनेशनल सिम या रीचार्ज नहीं करवाया था अपने मोबाइल मे, इस कारण बाहर निकलते ही उसके सिग्नल चले गए, मेरा सभी से संपर्क टूट सा गया, साथ ही कांग्रेस के समिति के सदस्य (organisers) जो मेरा इंतेजार कर रहे थे फ्रीबर्ग शहर में, उनसे भी मेरा कोई संपर्क नहीं रहा। मैंने मैप देखा कि कैसे बस स्टेशन जाना है, मुझे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, एक दो लोगों को पूछा कि कैसे बस स्टेशन जाना है, पर वो लोग कुछ समझ नहीं पाये और चले गए, शायद उनको इंग्लिश नहीं आती थी और मुझे जर्मन। मैं बिलकुल परेशान हो गया था, समझ में नहीं आ रहा था, साथ ही वहाँ का तापमान भी ठंडा रहता है, मुझे हल्की हल्की ठंड भी लगने लगी, बस के निकलने का समय भी हो रहा था, मन में तरह तरह के विचार आ रहे थे कि अब क्या होगा, बस निकल गयी तो क्या होगा, कैसे वहाँ जाऊँगा, क्या होगा, अभी कहाँ जाऊं, मैं अपना सामान लेकर इधर उधर बस परेशान हो रहा था, घबरा रहा था, बार बार मैप को देख रहा था कि कुछ समझ मे आए, अंजान शहर, अंजान देश में, कैसे किसी को बोलूं, एयरपोर्ट के पास तो लोग बहुत व्यस्त रहते ही हैं, बस उनके चेहरे को देख रहा था कि कोई शायद मेरी भाषा समझ ले, ऐसा नही कि किसी को भी वहाँ इंग्लिश नहीं आती होगी, मैंने 3-4 लोगों से पूछा पर वह समझ नहीं पाये और उन्होने मुझे जर्मन भाषा में कुछ बोला जो मैं समझ नहीं पाया। मैं कुछ भारतीय चेहरों को ढूंढने लगा की, शायद कोई मिल जाये, परंतु कोई दिखा नहीं, शाम होने लगी, अब लगा की बस छूट जाएगी, मन रोआँसा हो गया।

तभी एक वृद्ध महिला ने आवाज दी, उन्होंने अँग्रेजी मे मुझे बुलाते हुए बहुत प्यार से कहा "बेटे कुछ परेशान लग रहे हो, क्या बात है", शायद उन देवतुल्य महिला ने मेरे चेहरे की उदासी को देख लिया होगा, मैंने भी अति उत्साह में अँग्रेजी भाषा में कहा- माँ जी मुझे बस स्टेशन जाना हैं, उन्होने बोला की एयरपोर्ट के सामने से जो बस जा रही है, उसी मे बैठ जाओ, ये बस तुम्हें

सीधे बस स्टेशन पहुंचा देगी, तुम परेशान न हो, इसी बातचीत के दौरान उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम भारतीय लग रहे हो, मैंने कहाँ, हाँ माँ जी मै भारतीय ही हूँ, वह महिला कई बार भारत घूमने आई थी और भारतीय पर्यटन स्थलों पर गयी थी, उनको भारत देश बहुत पसंद था, उन्होंने कहा की भारत के लोग बहुत अच्छे होते है, बहुत मददगार होते है, उनको बहुत अच्छा लगा भारत मे घूमकर, वह बार बार भारत देश आना चाहती है, उनकी बहुत अच्छी यादें है, भारत देश मे भ्रमण को लेकर, शायद इसलिए भी उन्होने मुझसे बात की और मेरी मदद की, इस विषम अवस्था मे मेरे लिए वो भगवान का रूप लेकर ही आई थी। मैंने भी बस मे बैठने से पहले उनको प्रणाम किया और उनके पाँव छुए, यही भारतीय परंपरा है, जिसके कारण शायद उन्होने मेरी मदद की, आखिरकार मुझे बस मिल गयी और मैं कॉंग्रेस मे पहुँच गया, देश विदेश के वैज्ञानिकों, रिसर्चर के साथ मुलाक़ात हुई, मेरे रिसर्च को भी सराहा गया, कॉंग्रेस के समापन के बाद मैं वापस भारत आ गया, उन वृद्ध माँ से कोई कांटैक्ट एड्रैस नहीं ले पाया जल्दी में, इसका हमेशा अफसोस रहता है, वो उस समय भगवान का रूप ही थी और उनके उस अच्छे व्यवहार ने मेरी बहुत मदद की।

मेरी यह स्मृति लेख यह बताती है की अच्छे लोग हर जगह हैं, आपके आसपास हैं, आप भी अच्छे व्यक्ति बन सकते हैं, अपने अच्छे व्यवहार से, किसी कमजोर की सहायता करके, किसी गरीब की मदद करके, अपनी अच्छी और सभ्य वाणी से, देश समाज के लिए कोई भी अच्छा कार्य करके, माँ पिताजी की सेवा करके, पर्यावरण बचाकर, पेड़ लगाकर, पर्यटकों से अच्छा व्यवहार करके, बड़ों का सम्मान करने से, छोटों को प्यार देने से सभी लोग अच्छे इंसान बन सकते हैं। विदेशी पर्यटकों से किया गया अच्छा व्यवहार आपको भी अच्छा लगेगा और देश का मान सम्मान में भी वृद्धि करेगा और जब आप उनके देशों में घूमने जायेंगे तो वह भी आपको उतना ही मान सम्मान देंगे, आपकी मदद करेंगे, जैसे मेरी मदद की थी उन देवतुल्य वृद्ध महिला ने, उनके अच्छे व्यवहार की स्मृतियाँ हमेशा मेरे मन मानस में रहेंगी।

कविता

हितेश कुमार 'मेघ'
अधीक्षक

न्याय गाथा

अंधेरों की गलियों में रोशनी क्यों कम है,
जहाँ न्याय बिकता है, वहाँ इंसान ही ग़म है।
भूख से बिलखते बच्चे, सपनों से खाली आँखें,
सत्ता के महलों में गूँजती हैं खोखली गाथाएँ ।
पर देखो, हर आँसू में छिपा है एक प्रश्न अग्नि-सा,
हर मौन में दबा है एक क्रंदन गगन-सा।
और उस चुप्पी में भी एक स्वर है जो कहता है-
'अन्याय चिरकाल टिकता नहीं।'

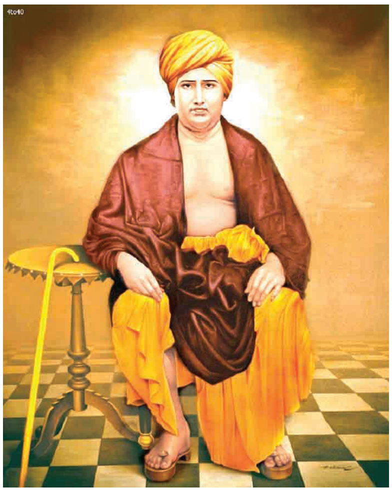

' हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।'
-स्वामी दयानन्द सरस्वती

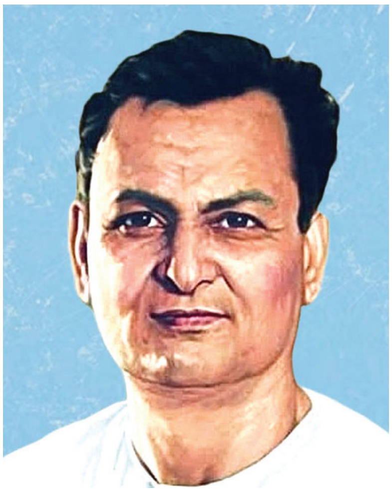

हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है।
-राहुल सांकृत्यायन

आलेख

राष्ट्र की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति

अभिषेक कुमार
निवारक अधिकारी

ईमानदारी वह नींव है जिस पर किसी भी राष्ट्र की समृद्धि और प्रगति टिकी होती है। ईमानदारी की संस्कृति का अर्थ है—व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, पारदर्शिता, ज़िम्मेदारी और नैतिक आचरण के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता। जब व्यक्ति, संस्थाएँ और सरकारें इन मूल्यों को अपनाती हैं, तो ऐसा वातावरण बनता है जिसमें विश्वास, नवाचार, न्याय और दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

ईमानदारी का अर्थ

ईमानदारी का मतलब है—सही काम करना, चाहे कोई देख रहा हो या नहीं। यह एक नैतिक मार्गदर्शक सिद्धांत है जो व्यक्ति को सच्चाई और न्याय की ओर ले जाता है। इसमें सच्चाई, ज़िम्मेदारी, दूसरों के प्रति सम्मान और कथनी व करनी में समानता जैसे गुण शामिल हैं। जो समाज ईमानदारी को महत्व देता है, वहाँ भ्रष्टाचार कम होता है, विश्वास अधिक होता है, और लोग सुरक्षित व सम्मानित महसूस करते हैं।

राष्ट्र निर्माण में ईमानदारी का महत्व

राष्ट्र केवल नेताओं से नहीं, बल्कि नागरिकों से भी बनता है। जब लोग ईमानदारी से काम करते हैं, तो वे राष्ट्र की प्रगति में सकारात्मक योगदान देते हैं। जैसेः

1. संस्थानों में विश्वासः जब संस्थाएँ पारदर्शी और जवाबदेह होती हैं, तो नागरिकों का विश्वास उन पर बढ़ता है।
2. आर्थिक विकासः भ्रष्टाचार मुक्त माहौल निवेश और उद्यमिता को बढ़ावा देता है। नैतिक व्यवसायों से नौकरियाँ पैदा होती हैं और आर्थिक स्थिरता आती है।
3. सामाजिक समरसताः ईमानदारी से समानता और न्याय को बल मिलता है। जब सबके साथ न्याय होता है, तो समाज में शांति और भाईचारा बढ़ता है।
4. नेतृत्व और शासनः ईमानदार नेता जनता का विश्वास जीतते हैं और समाज को एकजुट करते हैं।
5. युवा पीढ़ी का निर्माणः जब युवा ईमानदारी से भरे वातावरण में बड़े होते हैं, तो वे जिम्मेदार नागरिक बनते हैं।

ईमानदारी के सामने चुनौतियाँ

हालांकि ईमानदारी का महत्व बहुत है, परंतु इसे अपनाने में कई बाधाएँ भी हैं। भ्रष्टाचार, लालच, भाई-भतीजावाद और जवाबदेही की कमी सामाजिक नैतिकता को कमजोर करती हैं। कई बार शिक्षा की कमी और गलत आदर्श भी लोगों को गलत रास्तों पर ले जाते हैं। जहाँ झूठ और धोखाधड़ी को इनाम मिलता है, वहाँ सच्चाई कमजोर पड़ जाती है।

ईमानदारी की संस्कृति को बढ़ावा देना

ईमानदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए समाज के हर वर्ग को प्रयास करना होगाः

1. शिक्षा प्रणालीः नैतिक शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षण को प्राथमिकता देनी चाहिए।
2. मजबूत संस्थानः स्वतंत्र न्यायपालिका, पारदर्शी प्रशासन और स्वतंत्र मीडिया ईमानदारी को बनाए रखते हैं।
3. नेतृत्व द्वारा आदर्शः नेता अगर स्वयं ईमानदार हों, तो समाज में भी ईमानदारी बढ़ती है।
4. परिवार और समाजः ईमानदारी की शिक्षा सबसे पहले घर और समाज में मिलती है।
5. कानून और नीतियाँः भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कानून और ईमानदार व्यवहार को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ जरूरी हैं।

नागरिकों की भूमिका

हर नागरिक का दायित्व है कि वह ईमानदारी को अपनाए और बढ़ावा दे। रिश्वत न देना, गलत कार्यों की सूचना देना, अपने कार्यों में ईमानदारी रखना, और दूसरों को भी प्रेरित करना—ये छोटे लेकिन प्रभावशाली कदम हैं।

निष्कर्ष

ईमानदारी की संस्कृति एक दिन में नहीं बनती। इसके लिए समाज के हर हिस्से की सतत मेहनत और प्रतिबद्धता चाहिए। लेकिन इसके परिणाम दूरगामी और स्थायी होते हैं। ईमानदारी के साथ ही समृद्धि, न्याय और शांति संभव है। जब ईमानदारी जीवन का हिस्सा बन जाती है, तभी राष्ट्र सच्चे अर्थों में विकसित होता है।

समीक्षा

गुनाहों का देवता : गुनाहों का क्रम

रुचि मिश्रा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

उफ़्फ़! दिल इसके अलावा ना कुछ बोल पाता है और ना ही समझ पाता है। इतनी उलझन, इतनी बेचैनी, एक अजीब सा शोर और प्रश्नों से भरा मन। "गुनाहों का देवता" पढ़कर मन विचलित हो गया। मन इतना डूब जाएगा, यह ख़ुद मुझे भी पता नहीं था। एक अलग छाप छोड़ गई यह पुस्तक, एक अलग छवि बना गई साहित्य की, समाज की, प्रेम की और विवाह की।

किताब की शुरुआत सुधा की चंचलता से होती है, चन्दर के सुधा की टांग खींचने और शरारत से होती है। मन इतना खुश होता है दोनों के बीच प्रेम से भरी लड़ाइयाँ देखकर कि होंठ ख़ुद ही खिल जाते हैं। सुधा की चंचलता में हर स्त्री अपनी चंचलता देख सकती है, चन्दर के स्वभाव में हर पुरुष अपना स्वाभिमान देख सकता है।

सबकुछ अच्छा होता अगर सुधा का विवाह डॉ. कैलाश से ना होता और शायद समय रहते सुधा और चन्दर यह समझ पाते कि वह शक्ति, वह भाव जो उन्हें बाँधे हुए है वह कुछ और नहीं, "प्रेम" है। समझते दोनों ही हैं लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

पूरी पुस्तक में इतनी घटनाएँ हैं, इतने चित्र हैं जिन्हें यह चंद शब्दों में उकेरा ही नहीं जा सकता।

चन्दर कुछ समय तक एक आदर्श पात्र लगता है लेकिन जाने क्यों कुछ समय बाद उसके व्यवहार, आक्रोश, अविवेक, नासमझी से एक अजीब सी चिढ़ होती है।

सुधा विवाह नहीं करना चाहती, वह पढ़ना चाहती है, अपने पैरों पर होना चाहती है लेकिन चन्दर उसे अभागिनी बना देता है। सुधा के जीवन में चन्दर का स्थान देवतातुल्य है, वह उसे पूजती है, उसके प्रेम को अपने माथे चढ़ाया लेकिन चन्दर उसकी पूजा को सार्थक नहीं कर सका।

किताब का एक पात्र है बर्टी जो प्रेम में इतना पागल है कि प्रेमिका के धोखे को भी फूल बनाता है। मानने को तैयार ही नहीं कि वह सार्जेंट के साथ भाग गई। खिलते फूल उसे एहसास दिलाते हैं कि वह अब भी जीवित है।

प्रेम का इतना पक्ष-विपक्ष देखने को मिलता है कि कभी-कभी पाठक का मन भी इस बात को नकार देता है कि प्रेम में पवित्रता रह गई है।

सुधा के विवाह के बाद चन्दर पम्मी में गुम हो जाता है, शायद मन और तन दोनों की प्यास बुझाने के लिए। वह भूल जाता है कि उसका व्यक्तित्व कितना ऊँचा है और ऐसा करके वह किस गर्त में जा रहा है।

प्रमिला डिक्रूज़ उर्फ़ पम्मी 30 वर्षीय तलाकशुदा महिला है जो अपने जीवन से असंतुष्ट है। वह दिखाती है कि उसने अब जीवन जीने का ढर्रा बदल दिया है लेकिन वास्तव में वह जीवन के खोखलेपन में डूबी जाती है। चन्दर को देखकर उसे लगता है कि अब जीवन कुछ आसान होगा, वह अपने मन को किसी के साथ साझा कर सकेगी और वह ऐसा ही करती है।

ना जाने क्यों पम्मी का चन्दर के प्रति पम्मी का आकर्षण और समर्पण मन को भाता नहीं है।

चन्दर भले ही समझ नहीं पाता लेकिन पाठक उनकी घटनाओं को पढ़ते वक्त बहुत कुछ भाँप लेता है।

मन कभी-कभी यही कहता है कि चन्दर का प्रेम अब आसक्ति मात्र रह जाता है।

कैसा था चन्दर जिसका मन कभी सुधा का हो लिया, कभी पम्मी और कभी बिनती। चन्दर का पवित्र मन सुधा के विछोह में अपवित्रता और पाप की नदी में गोते खाता है।

इधर सुधा भी प्रेमहीन विवाह को निभाने में असफल ही रहती है। वह एक अच्छी पत्नी है लेकिन जो समर्पण, जो पवित्रता, जो प्रेम उसके मन में चन्दर के लिये होता है वह कैलाश के लिये कभी महसूस नहीं कर पाती।

सुधा प्रेम में सिर्फ़ आत्मा के संबंध को मानती है। शरीर का प्रेम से कोई संबंध नहीं होता, केवल मन से होता है ऐसा वो समझती है। ऐसे प्रेम की तृप्ति वह चन्दर के साथ महसूस कर चुकी है। अब उसे अपने जीवन से कोई आशा नहीं है। वह चन्दर के पत्राचार पर जीवित थी जिसे चन्दर क्रोध और अतिसोच के वशीभूत होकर छोड़ देता है और सुधा का पतन वहीं से शुरू हो जाता है। एक चहकती हुई चिड़िया विवाह के पिंजड़े में बंधकर अपनी चहक, चंचलता, मुस्कान सब खो देती है और अंततः मलिन मन उसके हृदय और शरीर में ऐसा घाव दे जाता है जो उसकी जीवनलीला समाप्त कर देता है। वेदना इस घटना के बाद इतनी गहरी होती है कि मन शून्य हो जाता है, आँखें पथराई सी लेकिन रोती भी हैं। दिल दुखता है सुधा की दशा पर। उसकी दशा उसके देवता का उपहार ही होता है जिसे वह सहर्ष स्वीकार करती है।

किताब ख़त्म हो जाती है लेकिन चन्दर, सुधा, पम्मी, बर्टी, बिनती, डॉ शुक्ला, कैलाश पाठक के मन में शोर मचाते रहते हैं। हृदय सिर्फ़ और सिर्फ़ सुधा के साथ सहानुभूति रखता है बाक़ी पात्र बोझ लगते हैं, खीझ पैदा करते हैं।

मन सवाल पूछते रहता है कौन सही था, कौन ग़लत था?

प्रेम क्या है? क्या प्रेम में शारीरिक सुख प्रधान है? यदि हाँ, तो फिर प्रेम कैसा, वह तो आसक्ति हो गई और यदि नहीं तो प्रेम पूर्णता प्राप्त क्यों नहीं करता?

अंत में इतना समझ आता है कि दबाव में किया गया विवाह सिर्फ़ एक बंधन है। वहाँ प्रेम नहीं, भाव नहीं, समर्पण नहीं। रहता है तो सिर्फ़ शारीरिक सुख भोगने का क्रम, आत्मिक अतृप्ति, मानसिक वेदना, दुख, जीवन में अरुचि और एक "काश" और इसी काश में जीवन बीत जाता है।

व्यंग्य

सरकारी दफ्तर में लंच टाइम और अंतरराष्ट्रीय संबंध

शाश्वत सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

दफ्तर की रोज़मर्रा की भागदौड़ और फाइलों के बीच सबसे प्यारा समय होता है – लंच टाइम। बाहर से देखने पर यह बस खाना खाने का ब्रेक लगता है, लेकिन असल में यह समय दफ्तर की अपनी 'डिप्लोमेसी' का होता है। यहाँ खाने के साथ-साथ रिश्ते, बातें और समझदारी भी परोसी जाती हैं।

सबसे पहले बात करें विविधता की। जिस तरह अलग-अलग देशों के लोग मिलकर अपनी संस्कृति और खाने-पीने की चीज़ें साझा करते हैं, उसी तरह दफ्तर की मेज़ पर भी सबका स्वाद अलग-अलग होता है। कोई पराठे लाता है, कोई पास्ता, कोई इडली, तो कोई छोले-भटूरे। धीरे-धीरे सब एक-दूसरे का खाना चखते हैं और जान जाते हैं कि "खाना सिर्फ़ पेट भरने का साधन नहीं, दिल जोड़ने का ज़रिया भी है।"

लंच टाइम में अक्सर छोटी-छोटी डिप्लोमेसी भी चलती रहती है। जैसे – अगर किसी की सब्ज़ी ज्यादा बन गई हो तो वह दूसरों से बाँट देता है। कोई कहता है, "आज मेरी रोटी कम पड़ गई," तो सामने वाला तुरंत मदद कर देता है। यह छोटे-छोटे समझौते वही हैं जो बड़े स्तर पर देशों के बीच सहयोग और भरोसे का आधार बनते हैं।

इसके अलावा, यह समय एक तरह का सांस्कृतिक पाठशाला भी है। जब लोग खाते-खाते अपने त्योहारों, परंपराओं या गाँव-शहर के किस्से सुनाते हैं तो बाकी लोग भी कुछ नया सीखते हैं। यह वैसा ही है जैसे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में देश अपने-अपने अनुभव साझा करते हैं और एक-दूसरे से सीखते हैं।

लंच टाइम की एक और बड़ी खूबी है विवाद सुलझाना। अगर सुबह किसी काम को लेकर तनातनी हो जाए, तो अक्सर वही लोग दोपहर को एक साथ बैठकर खाना खाते हैं और माहौल हल्का हो जाता है। जिस तरह देशों के बीच अनौपचारिक बातचीत रिश्तों को बेहतर करती है, उसी तरह लंच टाइम भी दफ्तर के माहौल को संतुलित रखता है।

युवा कर्मचारी के लिए यह समय सीखने और जुड़ने का भी मौका होता है। वे वरिष्ठ साथियों से सलाह ले सकते हैं, काम की बारीकियाँ समझ सकते हैं और रिश्ते मज़बूत कर सकते हैं। यही तो असली नेटवर्किंग है, जो किसी औपचारिक मीटिंग में मिलना मुश्किल होता है।

कुल मिलाकर, सरकारी दफ्तर का लंच टाइम सिर्फ़ खाने का वक्त नहीं है। यह छोटा-सा ब्रेक लोगों को जोड़ता है, तनाव घटाता है और रिश्तों को मज़बूत बनाता है। जैसे अंतरराष्ट्रीय रिश्ते आपसी बातचीत और समझ पर चलते हैं, वैसे ही दफ्तर की दोस्ती और टीमवर्क भी लंच टाइम की थाली में पकते हैं।

यशस्विनी मिश्रा, कक्षा-6
सुपुत्री श्री वेंकटेश मिश्र, अधीक्षक

'राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।'
–महात्मा गांधी

सरल उपाय

"ज्योतिष और हम भारतीय"

संगीता अधिकारी
सहायक आयुक्त

"सभी इच्छा तो किसी की भी पूरी नहीं होती,
क्या राजा क्या फकीर"

1.ज्योतिष का अर्थ है "प्रकाश का शास्त्र। यह भारत की प्राचीन विद्या है जिसे हम आम भाषा में वैदिक ज्योतिष कहते हैं। यह वेदों का एक अंग (वेदांग) है और इसका प्रयोग मूल रूप से सही समय (मुहूर्त) जानने और जीवन को ब्रह्मांडीय शक्तियों के अनुरूप ढालने के लिए किया जाता था। संक्षेप में, ज्योतिष केवल भविष्यवाणी नहीं है, बल्कि यह जीवन को ब्रह्मांडीय नियमों और प्रकाश (ग्रह-नक्षत्रों की ऊर्जा) के साथ संतुलित करने की विद्या है।

2. ज्योतिष के प्रमुख अंग :

- I. जन्म कुंडली (जातक ज्योतिष) –
- II. मुहूर्त
- III. प्रश्न कुंडली (प्रश्न ज्योतिष) –
- IV. दशा और गोचर –
- V. उपाय

3. प्राचीन काल में ऋषि-मुनि आकाश में ग्रह-नक्षत्रों की गति और चंद्रमा के चक्रों को देखते थे।

इन्हीं गणनाओं से मौसम, ऋतु, खेती-बाड़ी, और धार्मिक अनुष्ठानों के सही समय का निर्धारण किया जाता था। बाद में इन्हीं खगोलीय गणनाओं को मानव जीवन से जोड़कर ज्योतिष बना।

मतलब, ग्रह-नक्षत्र केवल भौतिक पिंड नहीं हैं, बल्कि उनका ऊर्जा और प्रभाव भी माना जाता है।

दोस्तों, भारत में दो चीज़ें कभी पुरानी नहीं होतीं – पॉलिटिक्स और ज्योतिष।

पॉलिटिशियन कहते हैं – "हम देश बदल देंगे"

ज्योतिषी कहते हैं – "हम आपकी किस्मत बदल देंगे।"

और बदलती सिर्फ़ हमारी जेब है।

"ज्योतिष आपकी समस्या का समाधान नहीं कर सकता, वे बस उसे कम ज़रूर कर सकते हैं।

4. अशुभ समय

आकाश में कुछ ग्रहों के मिलि जूली इलेक्टो मैग्नेटिक नेगेटिव फील्ड कुछ समय के लिए (-) हो जाती है। चारों तरफ एक नकारात्मक चिंगारी पैदा होती है। इससे एक अशुभ प्रभाव पैदा होता है। इस समय पर कोई भी नया काम शुरू करने से बचना चाहिए। कोई भी नया काम सफल नहीं हो पाता। अतः अशुभ समय के 15 मिनट पहले या 15 मिनट बाद में कोई नया काम नहीं करना चाहिए।

ज्योतिष के सरल उपाय अपनाकर अपना जीवन बदले

5. हम लोग पाप की गठरी लेकर जन्म लेते हैं, तदनुसार हमारा जीवन तय है कि हमें क्या मिलेगा क्या नहीं। हमारे शास्त्र ने बताया है कि हम कैसे बदलाव ला के सरल उपायों को अपनाकर अपनी ज़िंदगी को आसान बना सकते हैं

6. सूर्य लग्न या आत्मा का कारक है। अगर आपका शरीर कामजोर है, आत्मविश्वास की कमी है, कमजोर व्यक्तित्व है, या व्यक्तित्व में चमक नहीं है, तो आपका सूर्य कमजोर है। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि कृपया सूर्योदय के समय जल्दी उठें, 108 बार ॐ आदित्याय नमः का जाप करें। गायत्री मंत्र का जप करें।

7. दूसरे भाव का स्वामी बृहस्पति है। धन की समस्या, कान, नाक और गले में समस्या, बुरे संस्कार रुश्क भाषा, बच्चों की समस्या, आत्म अभिव्यक्ति समस्या, अंतर्मुखी आदि। "ॐ बृं बृहस्पतये नमः" मंत्र का कम से कम 108 बार जाप करें। केले के पेड़ की पूजा करके जल अर्पित करना भी शुभ है। अपने शिक्षकों का सम्मान करें।

ज्योतिषी कहते हैं – "तुम्हारा भविष्य सुनहरा है।"
भाई, सुनहरा तो तब होगा जब सोने की कीमत गिरेगी। अभी तो सुनकर ही घबराहट होती है।

8. तीसरे भाव का स्वामी मंगल है। भाई-बहन के बीच समस्या, कोई दोस्त नहीं, पड़ोसियों से झगड़ा, मेहनत करने में डर, पहल करने में समस्या। साहस की कमी लगती है। हनुमान चालीसा का पाठ करें

राशिफल पढ़ना भी मज़ेदार है – "आज किसी पुराने दोस्त से मुलाक़ात होगी।"
सच में हुई कर्ज़ देने वाला पुराना दोस्त घर पर आ गया।

9. चौथा घर चंद्रमा का घर है जो सुख शांति का प्रतिनिधित्व करता है माँ से खराब रिश्ते, घर की समस्या, चार पहिया वाहन नहीं, हमेशा डर बना रहता है, नियमित रूप से/सोमवार को भगवान शिव को जल चढ़ाएं।

10. सप्तम भाव शुक्र द्वारा शासित है।
विवाह संबंधी समस्याएँ, व्यावसायिक साझेदार आपको धोखा दे रहे हैं, विवाह सुचारू रूप से नहीं चल रहा है, विवाह संबंधी कोई भी समस्या। ॐ महालक्ष्मये नमः का जाप करें, पुरुष/महिला विपरीत लिंग का सम्मान करें। दक्षिण-पूर्वी कोने में मनी प्लांट लगाएँ। अपनी पत्नी से कहें अपने पैर जमीन पर मत उतारिएगा मैले हो जाएगा। उसके लिए सुंदर स्लीपर ला कर दे।
पत्नी - मेरा वेट कैसे कम होगा? पति- अपनी गर्दन को दाएं बाएं हिलायें।
पत्नी - किस समय? पति- जब कोई खाने को पूछे

11. दसवें भाव पर शनि का शासन है
आय संबंधी समस्याएँ, बार-बार चोट लगना, बीमारी और रोग समस्याएँ दे रहे हैं, घर में लीकेज, नियमित रूप से बहते नल, नौकरी/पैसे की स्थिरता के लिए, शनिवार को पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीया जलाएं। हनुमान चालीसा का पाठ करें। 108 बार ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप करें। बिना पूछे शनि मंदिर न जाएं और तेल दान न करें।
शनि की साढ़ेसाती सबसे खतरनाक बताई जाती है
लेकिन असली साढ़े साती तो तब होतीहै जब 7.5 दिन तक सैलरी अकाउंट में नहीं टिकती।

12. कुछ सूत्र

I. विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है, बल्कि इसे करने से, जीवन में आने वाली बाधाओं का निवारण होता है।

II. यदि किसी को बोलने में समस्या हो, विचार व्यक्त नहीं कर पा रहे हों, त्वचा रोग, बाल, व्यापार में हानि, संतान न हो तो भगवान श्री कृष्ण की पूजा करें।

III. यदि परिवार में मृत्यु या भूत-प्रेत जैसी गंभीर समस्याएं हों तब देवी दुर्गा की पूजा करें, 108 बार ॐ दु दुगाय नमः।

IV. आप किसी को गाली दे रहे हैं तो या किसी की आलोचना कर कर रहे है तो उसका बुरा नहीं होगा ध्यान राखे प्रकृति के सिद्धांतों को समझे,वो सब चीजे वापस आएगी क्योंकि आप ही इसे बना रहे हैं।

V. प्रार्थनाएं नियमित रूप से होनी चाहिए, ये उपाय एक दिन के लिए नहीं हैं, ये जीवनभर के लिए हैं।

"आप सभी को शुभकामनाओं के साथ कि आपके जीवन से आपकी सभी समस्याएँ हल हो"।

सदस्य, सीबीआईसी द्वारा स्कैनर डिवीजन, न्हावा शेवा में स्वदेशी आईसीएस के निर्माण कार्य हेतु भूमि पूजन

श्री योगेंद्र गर्ग, विशेष सचिव एवं सदस्य, सीबीआईसी ने दिनांक 16.09.2025 जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में भारत के पहले स्वदेशी रूप से विकसित ड्राइव थ्रू कार्गो स्कैनर (आईसीएस) के निर्माण कार्य शुरू करने के लिए भूमि पूजन किया। जेएनपीए और सीमाशुल्क विभाग के सहयोग से बीएआरसी द्वारा विकसित इस कार्गो निरीक्षण प्रणाली से निर्बाध एवं त्वरित व्यापार प्रवाह संभव हुआ। आईसीएस प्रणाली #मेक इन इंडिया और #आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा की ओर एक सशक्त कदम है।

वेंकटेश मिश्रा
अधीक्षक

एक शाम उनके नाम

(भगवान बुद्ध को समर्पित)

एक शाम उनके नाम खर्च कर लेना,
जो घर से निकले लेकिन घर कभी लौट न सके।

सोच लेना उन पर भी क्या बीती होगी,
जब एक दिन आधी रात अपने परिवार छोड़ घर से निकल पड़े।

उन्हें उस नन्हें शिशु को छोड़ गृह त्याग की हिम्मत कैसे हुई होगी?
अपने दिल पर पत्थर रख कैसे अपने माँ-बाप, पत्नी और अपने
लोगों को छोड़ दुनिया से वह विरक्ति लिया होगा?

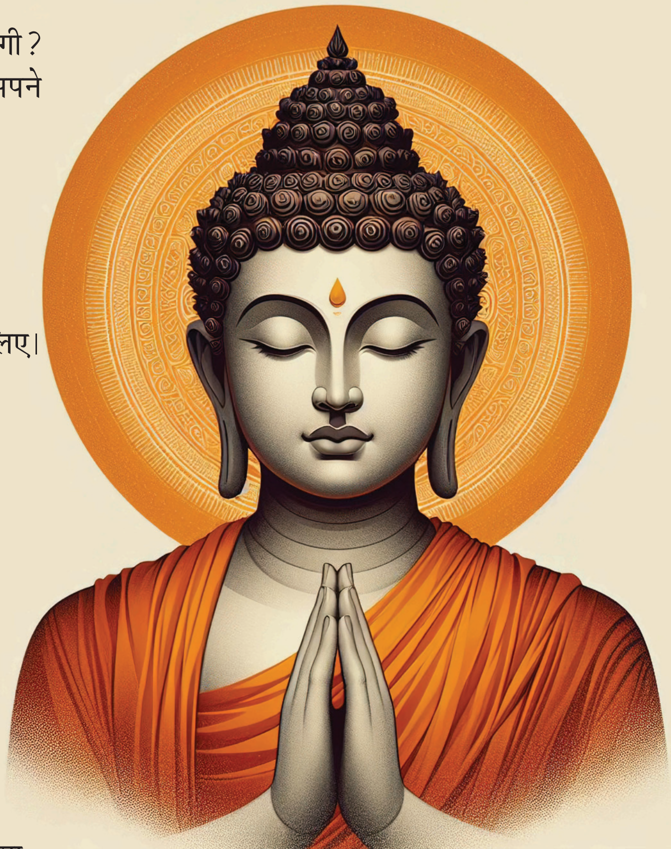

एक शाम उनके नाम खर्च कर लेना,
जो दुनिया के दुखों से विरक्ति के लिए,
अपनों से, अपनों के कष्टों से दूर चला गया,
मन के ऊपर विजय पाने के लिए, सबको रास्ता दिखाने के लिए।

वह कोई देवता नहीं, हम में से ही एक था,
जिससे लोगों का दुख देखा न गया,
दिन-रात वह सोचा करता,
कैसे होगा सब अपनों का दुख दूर?
तब जाकर कहीं उसके मन के एक कोने में ख्याल आया,
कि चलो मन के उपर विजय प्राप्त करें।

तब उसने अपने मन पर विजय प्राप्त करने की ठान ली,
मन पर विजय प्राप्त करने के बाद दुनिया को प्रकाश दिखाने
की ओर बढ़ गया।
पूरे दुनिया को आलोकित करने के बाद उसने साबित कर दिया,
कि उसके पास दुनिया के सारे दुखों पर विजय प्राप्त करने की
फार्मूला है,
जिसे धीरे-धीरे वो सबको बांटने लगा।

इस प्रकार पूरे दुनिया के लोगों के दुखों को हरने वाला,
वह बालक सिद्धार्थ एक दिन पूरे विश्व के शांति का मसीहा बना,
जिसको हम सब महात्मा बुद्ध के नाम से जानते हैं।

चलो एक शाम उनके नाम खर्च कर लेना,
जो घर से निकले लेकिन घर कभी लौट न सके।

कविता

"मन अधीर"

त्रिपुरारी सिंह
परीक्षक

मन अधीर,
है मन अधीर।
न चिंतन कर पाता,
अब कुछ भी गम्भीर!

है मन अधीर,
पीड़ित प्राचीर,
अन्तर को चीर,
बहता रुधिर!

पल एक न थमता,
बहता निरुद्वेग समीर।
भटकूँ मैं कहाँ ?
भटकाऊँ जग को कहाँ ?
सहमा भी हूँ,
होकर मैं वीर।
जाने क्यों ?

मन अधीर,
है मन अधीर।

परिणाम क्या?
कर में कृपाण का?
प्रमाण क्या?
मान का, सम्मान का?

बेबस बेसहारा बलवान बना,
लहू में है अभिमान सना।
यतीम बनाता आत्मबल को,
निर्निमेष निहारता नभ को।
ये सन्नाटा भी है बिलखता,
और सुलगते उर से,
निकलता निर्मम नीरस नीर,
मन अधीर,
है मन अधीर।

पुर में है जब, राम बसा,
सुखद भी, है ये धरा।
कल्लोल करती,
बहती निर्झरा।
पर सुख से कैसे,
है कहीं विष भरा?
कैसे न अबतक,
है वो रावण मरा।

चलाऊँ ब्रह्मास्त्र अब,
अभिमंत्रित कर तूणीर।
न होगा फिर,
मन अधीर।
ये मन तो है, वीर!
ये मन तो है, वीर।

सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

महत्वपूर्ण राजस्व आंकड़े : वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं अप्रैल-अगस्त 2025

क्रम	विवरण	वित्तीय वर्ष 2024-25 (राशि करोड़ में)	अप्रैल - अगस्त 2025 (राशि करोड़ में)
1.	सकल राजस्व Gross Revenue	160425.95	73231.26
2.	ड्राबैक भुगतान की निर्गम Outgo of Drawback	7278.65	3306.63
3.	रिफंड भुगतान की निर्गम Outgo of Refund	233.10	91.85
4.	शुद्ध राजस्व Net Revenue	152914.21	69832.79
5.	शुल्क संग्रहण एवं अन्य BCD & Others (Net)	45756.57	20324.84
6.	आईजीएसटी एवं क्षतिपूर्ति उपकर IGST & Comp. Cess	107157.64	49507.95
7.	आईजीएसटी रिफंड भुगतान की निर्गम IGST Refund Disbursement	26024.82	14397.65
8.	कुल टी ई यू की संख्या Total nos. of TEU's	7301526	3318837
9.	आयात टी ई यू की संख्या Total nos. of TEU's (Import)	3689995	1680820
10.	निर्यात टी ई यू की संख्या Total nos. of TEU's (Export)	3611531	1638017
11.	कंटेनरों की जांच संख्या No. of Containers scanned (in TEUs)	411708	173757
12.	दाखिल बिल ऑफ एंट्री की संख्या No. of Bills of Entry filed (Home Consumption + Warehouse + X Bond)	1061417	470397
13.	नौवहन बिलों की संख्या No. of Shipping Bills(Given LEO)	1616892	686669
14.	आयातित वस्तुओं का आकलन योग्य मूल्य Assessable value of imported goods (Home Consumption + Warehouse + X Bond)	705383.24	328632.56
15.	शुल्कयोग्य वस्तुओं का मूल्य Value of Dutiable Goods (BEs Home Consumption + X Bond)	576,093.82	267,124.50
16.	शुल्कमुक्त वस्तुओं का मूल्य (बिल्स ऑफ एंट्री का घरेलु उपभोग + X बॉन्ड) Value of duty free goods (BEs Home consumption + X Bond)	70,684.12	29,615.40
17.	अधिसूचना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व Revenue forgone vide Notifications	130,830.69	53,086.35
18.	निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं के तहत छोड़ा गया राजस्व Revenue forgone by EP Schemes	22409.62	10,648.68
19.	निर्यातित वस्तुओं का एफओबी मूल्य FOB Value of Exported Goods	546286.66	234683.86

टाइम रिलीज़ स्टडी, 2025

सीमाशुल्क मुंबई, अंचल II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

सीमाशुल्क मुंबई II में डब्लूसीओ द्वारा अनुशंसित एक नीतिगत टूल है जिसमें माल की निकासी में लगने वाले वास्तविक समय का अध्ययन किया जाता है। श्री योगेंद्र गर्ग, माननीय जोनल सदस्य, सीबीआईसी एवं सीमाशुल्क ने 12 जून 2025 को जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन और जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने आधिकारिक रूप से टाइम रिलीज़.स्टडी के 12 वें संस्करण का अनावरण किया। उनके साथ साथ सीमाशुल्क भवन के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

टाइम रिलीज़.स्टडी 2025 के महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं

- इस अध्ययन में 1 से 7 जनवरी 2025 के दौरान माल की निकासी का ब्योरा लिया गया ।
- यह अध्ययन सीमाशुल्क हितधारकों और संबद्ध एजेंसियों में ऑपरेशनल दक्षता का मानकीकरण करता है।
- टीआरएस के माध्यम से आयात/निर्यात कार्गो के लिए औसत रिलीज.समय की गणना की जाती है।

टाइम रिलीज़.स्टडी 2025 के महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं

- इस अध्ययन में 1 से 7 जनवरी 2025 के दौरान माल की निकासी का ब्योरा लिया गया।
- यह अध्ययन सीमाशुल्क हितधारकों और संबद्ध एजेंसियों में ऑपरेशनल दक्षता का मानकीकरण करता है।
- टीआरएस के माध्यम से आयात/निर्यात कार्गो के लिए औसत रिलीज़.समय की गणना की जाती है। इसके साथ साथ माल की 'निकासी शृंखला' में आने वाली अड़चनों का अध्ययन किया जाता है।
- व्यापार सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन डेटा आधारित नीतियों को बढ़ावा देता है जिससे हितधारकों के बीच समन्वयन, पारदर्शिता को बढ़ावा मिलता है।
- आयात की दृष्टि से औसत रिलीज टाइम (एआरटी) में वर्ष 2024 की तुलना में महत्वपूर्ण सुधार दिखाई दे रहा है जहाँ वर्ष 2024 में औसत रिलीज़ टाइम 83.45 घंटे था वहीं यह घटकर वर्ष 2025 में 72.86 घंटे हो गया है।
- वहीं एईओ आयातकों के मामले में भी महत्वपूर्ण सुधार हुआ है और औसत रिलीज़ टाइम 52.79 घंटे हो गया है। इसके साथ साथ सभी एईओ बिल ऑफ इंट्रीज़ का निपटान निर्धारित 48 घंटे घंटों के अंदर कर दिया गया।
- टी आर एस 2025 अध्ययन में पाया गया कि 92.5% बिल ऑफ इंट्रीस कार्गो आने के पहले ही फ़ाइल कर दी गई और उनमें से 95.3% बिल ऑफ इंट्रीज का कार्गो आने के पहले ही मूल्यांकन कर दिया गया।
- निर्यात की दृष्टि से औसत रिलीज़. टाइम में सुधार के रुझान देखे गए है। वर्ष 2024 की तुलना में निर्यात एआरटी 209.05 घंटे था वहीं वर्ष 2025 में यह 208.25 घंटे रहा।
- वर्ष 2025 में निर्यात के 208.05 घंटे के रिलीज़ घंटे के अंतर्गत माल के आने और वेसल की पोर्ट से रवाना होने के बीच सीमाशुल्क ने मात्र 2.61 घंटे (लगभग 1%) के अंदर ही अपनी प्रक्रिया पूरी कर ली।
- निर्यात के मामलों में माल के आने और 'लेट एक्सपोर्ट ऑर्डर' (एलईओ) की प्रक्रिया में सीएफएस शिपमेंट के द्वारा 50.97 घंटे लगे जबकि सीपीपी शिपमेंट में यह अवधि 3.37 घंटे रही।

महत्वपूर्ण सिफारिशें →

- आयातकों को बिल ऑफ इंट्रीज़ को पहले से ही फ़ाइल करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ICEGATE के माध्यम से अमेंडमेंट प्रक्रिया को बढ़ावा देना।
- सीएफएस के परिचालन में ऑटोमेशन को बढ़ावा i.e ई-इन्वॉइस , ई–भुगतान, डिजिटल डीओ आदि।
- पीजीए को शीघ्र निकासी के लिए प्री-इम्पोर्ट जांच करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- डीपीडी स्कीम को बढ़ावा देना।
- ड्यूटी भुगतान में होने वाले विलंब को कम करने के लिए ऑटोमेट ईमेल / एसएमएस रिमाइंडर और ईसीएल की ऑटो डेबिट को बढ़ावा देना।
- आरएमएस प्रॉफाइलिंग को मजबूत करना ताकि किसी भी प्रकार के जोखिमों के बिना सीमाशुल्क प्रक्रिया सुगम बने।

भविष्य में सीमाशुल्क गतिविधियों के बेहतर प्रदर्शन के लिए एक बेंचमार्क के रूप में टीआरएस को नियमित रूप से शामिल करना हमारा उद्देश्य होगा।

एकल अनुबंध सुविधा लॉन्च करवाने हेतु चर्चा

करदाताओं के लिए एकल अनुबंध सुविधा (इलेक्ट्रोनिक ई-बॉन्ड एवं ई-बीजी modules) उपलब्ध कराने एवं उचित रूप से इस सुविधा तो लागू करने के उद्देश्य से दिनांक 19.09.2025 को श्री रवींद्र बिनवडे, आईएएस एवं आईजी, श्री अरविंद घुगे, अपर आयुक्त, सीमाशुल्क(एनएसIII) एवं श्री अभिनव गुप्ता अपर निदेशक ICEGATE एवं आईजीआर अधिकारियों के मध्य पुणे में बैठक आयोजित की गई। 02 अक्टूबर 2025 से महाराष्ट्र में लागू की जाएगी। को यह सुविधा प्रारम्भ की जाएगी।

-: विभागीय उपलब्धियाँ :-

विशेष आसूचना एवं अन्वेषण विभाग (SIIB)

वित्तीय वर्ष 2025-26 में 31.07.2025 तक कुल राजस्व वसूली

- पिछले वित्तीय वर्ष में जुलाई माह तक 23 मामलों में 352.20 लाख रुपये की तुलना में इस वर्ष जुलाई माह 2025 तक 13 मामलों में 2483.4903 लाख रुपये की राशि की वसूली की गई।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में 31.07.2025 तक कुल गिरफ्तारियाँ

- अखरोट (इन-शेल) के कम मूल्यांकन के 3 मामलों में 3 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया
- विदेशी सिगरेट का केस : 02 गिरफ्तारियाँ

1- महत्वपूर्ण केस / Major Cases

मेसर्स ईगल इंफ्रा प्रा. लि. ठाणे द्वारा विशेष रूप से तैयार की गई 02 ट्रांसपोर्ट वाहन/शटल कार का आयात	गलत सीटीएच वर्गीकरण	7 करोड़ 33 लाख रुपये का विभेदक शुल्क (Differential Duty) बनता है, जिसे आयातक स्वेच्छा से चुकाने के लिए सहमत हो गया।

मेसर्स जे एम एस माईनिंग प्रा. लि. कोलकाता द्वारा विशेष रूप से तैयार की गई 04 इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसपोर्ट वाहन/शटल कार का आयात	अधिसूचनासंख्या 50/2017 की क्रम संख्या 525{1[बी]} और अधिसूचना संख्या 11/2021 (AIDC के लिए) की क्रम संख्या 17 के अंतर्गत शुल्क लाभ का गलत दावा (क्लेम) किया है।	8 करोड़ 8 लाख रुपये का विभेदक शुल्क (Differential Duty), जिसे आयातक स्वेच्छा से भुगतान करने के लिए सहमत हुआ।

2- जब्ती के मामले / Seizure cases

स्टेनलेस स्टील सजावटी पैनल	स्टेनलेस स्टील सजावटी पैनल का गलत वर्गीकरण सीटीएच 7219 और 7220 के तहत अनिवार्य बीआईएस अनुपालन से बचने के लिए किया गया।	जब्ती का विवरण : घोषित मालः स्टेनलेस स्टील सजावटी पैनल मात्राः 47 कंटेनर माल का मूल्यः लगभग 13 करोड़ रुपये

टूल और डाई स्टील	एसईजेड जेएनपीए से बिल ऑफ लैडिंग तिथि के संभावित दुरुपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। बिल ऑफ लैडिंग की सत्यता की पुष्टि के लिए मामला अर्शिया, एसईज़ेड से भेजा गया था।	आयातकः वेंचुरा अलॉय एंड स्टील प्रा लि. जब्ती का विवरण इस प्रकार हैः- मात्राः 812.5 मीट्रिक टन जब्ती मूल्यः 9.75 करोड़ रुपये आयातः चीन जब्ती की तिथिः 11.07.2025

इंटरैक्टिव फ्लैट-पैनल डिस्प्ले (IFPD)	मेसर्स सॉफ्टलॉजिक कंसल्टेंसी सर्विसेज़ ने वर्गीकरण और मूल्यांकन के संदर्भ में गलत घोषणा करके इंटरएक्टिव फ्लैट पैनल डिस्प्ले का आयात किया गया।	**ज़ब्ती का विवरण :** **मात्राः 4 कंटेनर** **मूल्यः 2.56 करोड़ रुपये** **आयातः चीन** **ज़ब्ती तिथिः 22.07.2025**

ब्रांडेड जूतों के मामलों में गलत घोषणा (आईपीआर)	एनसीटीसी से प्राप्त सूचना, एसआईआईबी (इम्पोर्ट) ने जूते/चप्पलों के 9 कंटेनर ज़ब्त किए, (नाइकी, एयर, एडिडास, क्रॉक्स आदि जैसे अन्य ब्रांडों के जूते) वर्गीकरण, मूल्यांकन, बौद्धिक संपदा अधिकार उल्लंघन और सामानों की गलत घोषणा की गई थी।	ज़ब्ती का विवरण इस प्रकार है:- घोषित सामानः ट्रॉली बैग, बैक कवर, महिलाओं के सैंडल, प्लास्टिक की बोतलें मात्राः 9 कंटेनर, सीओओः चीन ज़ब्ती मूल्यः 4-5 करोड़ रुपये (लगभग) ज़ब्ती की तिथिः जून और जुलाई 2025

सिगरेट केस	2 कंटेनरों में रखे सामान को स्पोर्ट्स फ्लोर मैट और जिप्सम प्लास्टर बोर्ड बताया गया। जाँच के दौरान, 120 लाख सिगरेट की स्टिक बरामद हुईं। वितरण बंदरगाहः जेएनसीएच और आईसीडी सनथ नगर, हैदराबाद	घोषित मालः 1. स्पोर्ट्स फ्लोर मैट, 2. जिप्सम प्लास्टर बोर्ड मात्राः 120 लाख सिगरेट की स्टिक कंटेनरों की संख्याः 02 सीओओः यू ए ई ज़ब्ती मूल्यः 17.9 करोड़ रुपये (लगभग) ज़ब्ती की तिथिः जुलाई और अगस्त, 2024

केन्द्रीय आसूचना इकाई (CIU)

महत्वपूर्ण केस :

बेस ऑयल/प्रोसेस ऑयल के रूप में मिलावटी डीजल/ईंधन का आयात

मेसर्स राज ट्रेडर्स और मेसर्स ग्लोबल इंटरनेशनल को 'प्रोसेस ऑयल-40' के नाम पर मिलावटी डीजल तेल का आयात करते पाया गया, जिसे सीटीएच 34031900 के तहत वर्गीकृत किया गया था, जिस पर 7.5% बीसीडी, 10% एसडब्ल्यूएस और 18% आईजीएसटी शुल्क था।

परीक्षण रिपोर्ट में पुष्टि हुई कि माल 'बेस ऑयल' की श्रेणी में है जिसे CTH 27101971 के तहत वर्गीकृत किया गया है। लेकिन आयातकों ने शुल्क कम करने के लिए इसका मूल्य 430 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन घोषित किया, जबकि वास्तविक रूप से यह औसत 983.52 अमेरिकी डॉलर था।

मामले में आयातक द्वारा 'गलत घोषणा करना' पाया गया और आसूचना इकाई (सीआईयू) द्वारा की गई जांच में 'नमूने लेने में गड़बड़ी का पता चला' अर्थात नमूने 'आयातित कंटेनरों से लेने के बजाय' 'बाहर' से लाए गए अन्य नमूने थे।

आयातक ने माननीय उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर की और दिनांक 23.07.2024 को माल की रिहाई के लिए एक अस्थायी अदालती आदेश प्राप्त किया, हालांकि बाद में अदालत ने तथ्यों को दबाने का पता चलने पर इसे वापस ले लिया।

लेखापरीक्षा (AUDIT)

महत्वपूर्ण केस : वर्ष – 2024-25

1-आयातकर्ता का नाम मेसर्स टीडीएस लिथियम गुजरात प्राइवेट लिमिटेड (Auditee) लेखापरीक्षा की प्रकृति – PBA	वसूली – रुपये 3,37,64,975/- (शुल्क अंतर, ब्याज और जुर्माना 15% सहित)	'लेज़र वेल्डिंग मशीन, हीटर यूनिट, बिजली मीटर, पाइप, पिन और बिजली आपूर्ति इकाई' के रूप में घोषित वस्तुओं के लिए CTH के संदर्भ में गलत घोषणा की है। घोषित CTH: लेज़र वेल्डिंग मशीन (8479); हीटर यूनिट (8515); बिजली मीटर (9027); पाइप, पिन (8424); बिजली आपूर्ति इकाई (8531) सही CTH: लेज़र वेल्डिंग मशीन (8515); हीटर यूनिट (8516); बिजली मीटर (9028); पाइप, पिन (7306); बिजली आपूर्ति इकाई (8504)
2- आयातकर्ता का नाम – मेसर्स वनहुआ इंटरनेशनल (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड (Auditee) लेखापरीक्षा की प्रकृति – PBA	वसूली – रुपये 4,62,59,814.83/-	अधिसूचना संख्या 19/2024-सीमा शुल्क (एडीडी) दिनांक 22.10.2024 के अनुसार, केंद्र सरकार ने CTH 39095000 Tc के अंतर्गत थर्मोप्लास्टिक पॉलीयूरेथेन पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया है। कुछ आयातकों ने 22.10.2024 से 11.11.2024 की अवधि के दौरान न्हावा शेवा पोर्ट (INNSAI) के माध्यम से चीन से CTI 39095000 के अंतर्गत थर्मोप्लास्टिक पॉलीयूरेथेन के आयात के लिए अधिसूचना संख्या 19/2024-सीमा शुल्क (एडीडी) दिनांक 22.10.2024 का उल्लंघन करते हुए एंटी-डंपिंग शुल्क का भुगतान नहीं किया है।

आलेख

हमारा पर्यावरण

गौरव कुमार
कर सहायक

'पर्यावरण' शब्द स्वयं में ही एक पूर्ण ब्रह्मांड समेटे हुए है। 'परि' यानी चारों ओर और 'आवरण' यानी जो हमें घेरे हुए है। यह केवल पेड़-पौधों, नदियों-पहाड़ों का नाम नहीं है; यह वह सजीव-निर्जीव समष्टि है जिसके बीच हम सांस लेते हैं, विकसित होते हैं और अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं। हमारा पर्यावरण हमारी सबसे मूल्यवान विरासत और जीवन का अनिवार्य आधार स्तंभ है। यह लेख हमारे पर्यावरण के विविध पहलुओं, उसके समक्ष मौजूद गंभीर चुनौतियों, उनके समाधानों और हमारे नैतिक दायित्व पर एक गहन दृष्टिपात करेगा।

पर्यावरण एक जटिल शब्द है, जिसके मुख्यतः दो घटक हैं - जैविक और अजैविक। जैविक घटक, वे सभी सजीव तत्व हैं जो पर्यावरण का निर्माण करते हैं। इनमें सूक्ष्म जीवाणु, कीट-पतंगे, पेड़-पौधे, विभिन्न प्रकार के जानवर, पक्षी और स्वयं मनुष्य भी शामिल है। सभी जैविक घटक एक-दूसरे पर निर्भर रहकर खाद्य श्रृंखला और पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करते हैं। अजैविक घटक, वे निर्जीव तत्व हैं जो जैविक घटकों के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं। इनमें हवा, पानी, मिट्टी, सूर्य का प्रकाश, तापमान, खनिज, पहाड़, चट्टानें आदि शामिल हैं। ये दोनों घटक मिलकर एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं, जहाँ हर एक का अपना एक विशिष्ट स्थान और महत्व है। किसी एक घटक में गड़बड़ी पूरे तंत्र को प्रभावित करती है।

पर्यावरण का हमारे जीवन में महत्व अतुलनीय है। वायुमंडल हमें ऑक्सीजन प्रदान करता है, जो हर सांस के साथ हमारे शरीर को जीवंत रखती है। पेड़-पौधे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा इस ऑक्सीजन का निरंतर उत्पादन करते हैं। नदियाँ, झीलें, भूजल और वर्षा का जल हमारी पीने, सिंचाई, उद्योग और दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। जल ही जीवन है, यह कोई मुहावरा नहीं, एक सच्चाई है। उपजाऊ मिट्टी हमें अनाज, फल, सब्जियाँ और अन्य खाद्य पदार्थ प्रदान करती है। मिट्टी में पाए जाने वाले सूक्ष्मजीव मृदा की उर्वरता बनाए रखते हैं। पर्यावरण ही हमें आवास (लकड़ी, ईंट, पत्थर), वस्त्र (कपास, ऊन), ऊर्जा (जल, कोयला, पेट्रोलियम) और असंख्य प्राकृतिक संसाधन प्रदान करता है।

वन, महासागर और वायुमंडल पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित रखते हैं, जिससे जीवन योग्य परिस्थितियाँ बनी रहती हैं। कृषि, पर्यटन, मत्स्य पालन, वनोपज जैसे अनेक उद्योग सीधे तौर पर पर्यावरण पर निर्भर हैं। स्वच्छ पर्यावरण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की कुंजी है। प्रदूषित वातावरण अनेक बीमारियों का कारण बनता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति की पूजा की परंपरा रही है। नदियों को देवी, पेड़ों को पूज्यनीय माना गया है। पर्यावरण हमारी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है।

दुर्भाग्यवश, मानवीय लालच और विकास के नाम पर की जा रही अंधाधुंध गतिविधियों ने हमारे इस अनमोल खजाने को गहरे संकट में डाल दिया है। आज हमारा पर्यावरण विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है।

वायु प्रदूषण आज सबसे गंभीर और तात्कालिक खतरा है। बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण और वाहनों की बढ़ती संख्या ने वायुमंडल को जहरीला बना दिया है। पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहन कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैसें उत्सर्जित करते हैं। फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं और रसायन वायु प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत हैं। निर्माण गतिविधियों और सड़कों की धूल से वायु में PM 2.5 और PM 10 कणों की मात्रा खतरनाक स्तर तक पहुँच जाती है। किसानों द्वारा पराली जलाना, विशेषकर उत्तरी भारत में, वायु प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारण बन गया है। कोयला जलाना, कचरा जलाना, और घरेलू ईंधन का उपयोग इनके अन्य कारण हैं। वायु प्रदूषण के कारण दमा, फेफड़ों का कैंसर, श्वास संबंधी बीमारियाँ, हृदय रोग, आँखों में जलन और समयपूर्व मृत्यु जैसी गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। अम्लीय वर्षा, ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि, ओजोन परत का क्षरण और पेड़-पौधों को नुकसान, इनके गंभीर परिणाम हैं।

हमारी नदियाँ, जो कभी जीवन का प्रतीक थीं, आज गंदे नालों में तब्दील होती जा रही हैं। शहरों और कस्बों का गंदा पानी सीधे नदियों और जलाशयों में बहा दिया जाता है। कारखानों से निकलने वाले रासायनिक कचरे और भारी धातुओं (जैसे सीसा, पारा) को नदियों में प्रवाहित किया जाता है। खेतों में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशक और रासायनिक उर्वरक बारिश के पानी के साथ बहकर भूजल और नदियों में मिल जाते हैं। नदियों और समुद्रों में प्लास्टिक की थैलियों और अन्य कचरे का जमाव एक वैश्विक समस्या बन गया है। जिसके कारण हैजा, टाइफाइड, पीलिया, दस्त आदि गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। प्रदूषित पानी में मछलियों और अन्य जलीय जीवों की मृत्यु हो जाती है, पूरी की पूरी पारिस्थितिकी नष्ट हो जाती है। स्वच्छ जल की उपलब्धता दिन-ब-दिन कम होती जा रही है।

उपजाऊ भूमि का ह्रास भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा है। आजकल रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक इस्तेमाल बढ़ गया है। औद्योगिक और शहरी कचरे का भूमि पर डाला जाना बहुत ही चिंता का विषय बना हुआ है। अपघटित न होने वाले कचरे जैसे प्लास्टिक का भूमि में दब जाना, वनों की कटाई के कारण मिट्टी का कटाव आदि गंभीर समस्याएं है। मृदा की उर्वरता में कमी, फसलों के उत्पादन और गुणवत्ता पर

बुरा असर, जहरीले रसायनों का खाद्य श्रृंखला में प्रवेश, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, मरुस्थलीकरण की समस्या आदि मृदा प्रदूषण के परिणाम हैं।

शोर भी एक खतरनाक प्रदूषण है जिसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। यातायात का शोर, लाउडस्पीकर, औद्योगिक मशीनें, निर्माण कार्य आदि ध्वनि प्रदूषण के उदाहरण हैं, इनसे भी लोगों को तनाव, बधिर समस्या, नींद में खलल, उच्च रक्तचाप और एकाग्रता में कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

पेड़ पृथ्वी के फेफड़े हैं। विकास परियोजनाओं, कृषि विस्तार और लकड़ी की मांग के चलते वनों का तेजी से सफाया हो रहा है। जिससे वन्यजीवों के आवास का विनाश होता जा रहा है, जिससे कई प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं। वनों के कटाव के कारण मिट्टी का कटाव बढ़ता जा रहा है। वर्षा चक्र का असंतुलन, जिससे सूखा और बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है। वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि, जो ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा देती है।

जलवायु परिवर्तन पर्यावरणीय समस्याओं का सबसे बड़ा और सर्वव्यापी परिणाम है। ग्रीनहाउस गैसों (कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन आदि) के उत्सर्जन में वृद्धि के कारण पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। ध्रुवों की बर्फ का पिघलना, जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है और तटीय शहरों के डूबने का खतरा पैदा हो गया है। अत्यधिक गर्मी, अनियमित मानसून, भीषण चक्रवात, बाढ़ और सूखे की घटनाओं में वृद्धि, फसल चक्र बिगड़ना, उत्पादन में कमी जैसी समस्याएं पैदा हो रही हैं। कई पौधे और जंतु की प्रजातियां अपने परिवेश के अनुकूल नहीं ढल पा रहे हैं।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली दिवाली के बाद और सर्दियों के महीनों में दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार होती है, जहाँ AQI (एयर क्वालिटी इंडेक्स) खतरनाक स्तर (400-500+) को छू जाता है। सैकड़ों शहरों का अनुपचारित और औद्योगिक कचरा गंगा नदी में प्रवाहित होता है, जिससे इसकी पवित्रता और शुद्धता खतरे में है। नमामि गंगे जैसे प्रयासों के बावजूद स्थिति चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालय के ग्लेशियर पीछे हट रहे हैं, जिससे लंबे समय में गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों के जलप्रवाह पर गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। भारत में प्लास्टिक कचरा प्रबंधन एक बहुत बड़ी चुनौती है। सिंगल यूज़ प्लास्टिक नालियों, भूमि और जल निकायों को प्रदूषित कर रहा है।

इन गंभीर चुनौतियों के बावजूद, स्थिति निराशाजनक नहीं है। आवश्यकता है एक सामूहिक, समन्वित और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्य करने की। समाधान के उपाय व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर किए जा सकते हैं। परिवर्तन की शुरुआत हमेशा स्वयं से होती है। हर व्यक्ति छोटे-छोटे कदम उठाकर एक बड़ा बदलाव ला सकता है। अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनका देखभाल करें। यह वायु शुद्धिकरण, मिट्टी के कटाव को रोकने और जलवायु नियंत्रण का सबसे प्रभावी तरीका है। पानी की हर बूंद कीमती है। नहाते समय, ब्रश करते समय नल बंद रखें। रेन वाटर हार्वेस्टिंग को बढ़ावा दें। पानी की बर्बादी रोकें। अनावश्यक बिजली के उपकरण बंद रखें। LED बल्ब का इस्तेमाल करें। प्राकृतिक प्रकाश और हवा का अधिक से अधिक उपयोग करें। अनावश्यक चीजों की खरीदारी कम करें, विशेष रूप से सिंगल यूज़ प्लास्टिक आदि. पुराने सामान को फेंकने के बजाय उसे दूसरे काम में लाएँ (जैसे पुराने बर्तनों में पौधे लगाना)। कागज, प्लास्टिक, कांच और धातु को अलग से एकत्र करें ताकि उनका recycling हो सके। कूड़ा-कचरा सार्वजनिक स्थानों पर न फेंकें। जैविक कचरे को compost में बदलें। यातायात के विकल्पः जहाँ तक संभव हो, पैदल चलें, साइकिल का इस्तेमाल करें या सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करें। वाहनों का नियमित रखरखाव और प्रदूषण जाँच करवाएं। पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाएँ। अपने परिवार, दोस्तों और समुदायों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करें। सोशल मीडिया का सकारात्मक इस्तेमाल करें। अपने आसपास स्वच्छता ड्राइव्स का आयोजन करें, पार्कों, तालाबों और सार्वजनिक स्थानों की सफाई में भाग लें। सेमिनार, वर्कशॉप, नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों को जागरूक करें। खाली पड़ी जगहों पर सामूहिक तौर पर सब्जियाँ और फल उगाएँ। स्थानीय प्रशासन से मांग करें कि वे कचरा प्रबंधन, मलजल प्रबंधन और पार्क के रखरखाव का सही प्रबंधन करें ।सरकार द्वारा पर्यावरण प्रदूषण के लिए सख्त कानून बनाकर और उन्हें प्रभावपूर्ण तरीके से लागू कराकर, प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर भारी जुर्माना लगाकर प्रदूषण को काम किया जा सकता है। बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाकर और जंगलों की अवैध कटाई को रोककर काफी हदतक परिस्थितियों को सुधारा जा सकता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत जैसे पुनः प्राप्य ऊर्जा स्रोतों के विकास और इस्तेमाल को प्रोत्साहन देकर कोयला और पेट्रोलियम पर निर्भरता को कम किया जा सकता है। नदियों को प्रदूषण मुक्त करने के लिए महत्वाकांक्षी परियोजना (जैसे नमामि गंगे परियोजना) को सफल बनाकर, वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाकर, ड्रिप इरीगेशन बढ़ावा देकर जल प्रदूषण की समस्याओं से निपटा जा सकता है। सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था जैसे मैट्रो, इलेक्ट्रिक बशेस जैसे प्रभावकारी और प्रदूषण मुक्त सार्वजनिक परिवहन प्रणाली का विस्तार कर वायु प्रदूषण की समस्या को कुछ हद तक काम किया जा सकता है। इलेक्ट्रिक कचरे के सुरक्षित निष्पादन और पुनर्चक्रण के लिए उचित व्यवस्था विकसित करना, शिक्षा पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करना, बच्चों को विद्यालय स्तर से ही पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार बनाना एक सही कदम साबित हो सकता है।

भारतीय दर्शन और संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा सदियों पुरानी है। हमारे पूर्वज प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहते थे। पीपल, बरगद, तुलसी, नीम जैसे पेड़-पौधों को पूज्यनीय माना गया है। इसका वैज्ञानिक आधार यह है कि ये पेड़ पर्यावरण शुद्धिकरण में अहम भूमिका निभाते हैं। गंगा, यमुना गोदावरी आदि नदियों को माता का दर्जा दिया गया, जिससे लोगों में इनके प्रति श्रद्धा और संरक्षण की भावना पैदा हो। गाय, बैल, हाथी, मोर, सांप आदि को धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व दिया गया, जिससे जैव विविधता का संरक्षण हो । कई त्यौहार प्रकृति से जुड़े हैं जैसे वृक्षारोपण से जुड़ा वृक्षों का त्योहार 'वन महोत्सव', नदियों से जुड़ा 'छठ पूजा', फसलों से जुड़े त्योहार जैसे बैसाखी ओणम। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति पूरी तरह से प्राकृतिक स्रोतों (जड़ी-बूटियों) पर आधारित है, जो जैव विविधता के संरक्षण पर जोर देती है। हमें अपनी इस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से प्रेरणा लेते हुए आधुनिक चुनौतियों का सामना करने की जरूरत है।

'हमारा पर्यावरण' कोई बाहरी चीज नहीं है जिसकी देखभाल दूसरों को करनी है। यह हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। आज हमारे सामने एक विकल्प हैः या तो हम अपनी सुविधा और लालच के लिए इस विरासत को नष्ट करते रहें, या फिर एक जिम्मेदार नागरिक की तरह व्यवहार करते हुए इसे संजोकर रखें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ, हरा-भरा और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करें।

पर्यावरण संरक्षण कोई प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि एक जीवनशैली होनी चाहिए। आइए, हम सब मिलकर प्रण करें कि हम अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे सकारात्मक बदलाव लाकर इस धरती माता के कर्ज को चुकाने का प्रयास करेंगे। क्योंकि, यही हमारा अस्तित्व है, यही हमारा भविष्य है और यही हमारा सबसे बड़ा धर्म है।

गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन, वर्ष 2025

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर माननीय मुख्य आयुक्त महोदय श्री विमल कुमार श्रीवास्तव के कर कमलों से जे एन सी एच न्हावा शेवा में ध्वजारोहण, सम्बोधन एवं पुरस्कार वितरण किया गया ।

सीमाशुल्क मुंबई अंचल II जेएनसीएच, न्हावा शेवा में हिंदी पखवाड़ा 2024 का आयोजन

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के निर्देशानुसार दिनांक 14.09.2024 से 29.09.2024 तक की अवधि के दौरान सीमाशुल्क मुंबई अंचल II जेएनसीएच, न्हावा शेवा के अंतर्गत कार्यरत 07 आयुक्तालयों के लिए संयुक्त हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम से राजभाषा का हीरक जयंती वर्ष मनाकर किया गया।

इस अवसर पर विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' के छठवें अंक का विमोचन भी किया गया।

पखवाड़े के अंतर्गत विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पण एवं राजभाषा शब्दावली प्रतियोगिता, आलेखन (ड्राफ्टिंग) एवं राजभाषा ज्ञान जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषियों के लिए अलग-अलग मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाई गई एवं विजताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

समापन समारोह दिनांक 27.09.2024 को आयोजित किया गया जिसमें कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क मुंबई अंचल II श्री राजेश पांडे ने अपने सम्बोधन में पूरे अंचल में किए जाने वाले राजभाषा नीति से जुड़े कार्यान्वन को केंद्रित करते हुए राजभाषा अनुपालन को कार्यालय से बाहर भी ले जाने की आवश्यकता बताई।

कविता

वंदे भारत

सुमित गर्ग
कर सहायक

वंदे भारत बोलो, गर्व से अपना शीश उठाओ,
धरती जिस पर जन्म लिया है, उसको शीश नवाओ।
गंगा की धार बहती है जिसमें पावन नाद समाया,
हिमगिरि की चोटी पर बैठ स्वयं ईश्वर मुस्काया।
ये वह भूमि है जहां तपस्वी, ज्ञानी और वीर पले,
हर कोने में इतिहास से सजी स्वर्णिम गाथाएँ चलें।
यहाँ नारी को देवी मानें, संस्कारो की भूमि है,
दृढ़ता से अटल रहकर हिमालय ने धरती चूमी है।
वीरों की यह जन्मभूमि है, रणभूमि का शृंगार,
माती इसकी परम पूज्य है, आओ इसको करें प्रणाम।

हर कोना इसका पूजा-स्थल, हर वृक्ष वंदनीय यहाँ,
संस्कृति, कला, विज्ञान, शौर्य सबकुछ है अद्वितीय यहाँ।
जहां गांधी ने सत्य सिखाया, भगत ने प्राण आहुति दी,
सुभाषचंद्र की वाणी में भी गूंजी ललकार केवल एक 'आजादी'।

चंद्रशेखर, बिस्मिल, अशफाक़ हँसते-हँसते मिट गए,
देकर प्राण देश को अपने, हमको सुख से भर गए।
भारत माँ के आँचल में विभिन्न धर्मों की शांति है,
ग़र देश पर आए आंच तो एकता की क्रांति है।

कोई खेतों में हल चलाकर देश सेवा करता है,
कोई सीमा पर खड़े रहकर जीवन अर्पण करता है।
कोई बच्चों को शिक्षा देकर ज्ञान की ज्योत जलाता है,
कोई रोगी की सेवा करके सेवा का भाव दिखाता है।
जो देश के लिए जिए वो देशभक्त कहलाते,
कभी वर्दी में, कभी वाणी में सब अपना धर्म निभाते।
भ्रष्टाचार मिटे देश से अगर हो ईमानदारी की बात,
देश के हर नागरिक में गूँजे सच्चाई से जीने की बात।
समय हुआ अब जागने का, छोड़ो सारा आलस प्यारे,
त्याग के सारे भ्रम और भ्रांतियाँ राष्ट्र सेवा हो संकल्प तुम्हारे।

कविता

अद्वैत का तट

सौरभ सिन्हा
अनुज : गौरव कुमार, कर सहायक

हम मिले,
जैसे दो नदियाँ,
जिन्हें जन्मों पहले की किसी अनकही शपथ ने
कुछ दूर तक साथ बहने को बाँध दिया हो।

वो दिन,
जैसे चिरशीत ऋतु के बाद उतरी पहली वसंत-
जहाँ सूर्य भी स्निग्ध था,
और छाँव भी करुणामयी।

पहली भेंट में ही
क्षितिज ने कह दिया था- हमारे आकाश अलग हैं,
पर आत्मा ने दिशा नहीं मोड़ी।
शायद किसी जन्मों पुराने योग का संचित पुण्य
हमें इस पवित्र संगम तक ले आया,
और किसी अनलिखे कर्म का शेष ऋण
हमारे तटों के बीच अदृश्य दूरी खींचता रहा।

अब तुम अपने अनंत में,
मैं अपने अनंत में
पर हमारी धाराओं में बहने वाला
उस एक ही स्रोत का अमृत-स्मरण अब भी जीवित है।

कहते हैं- नदियाँ लौटती नहीं,
पर मैं जानता हूँ-
जब कालचक्र पूर्ण होगा,
और युगों की संध्या प्रभात में बदलेगी,
तब स्वयं महासागर
अपनी बिछड़ी धाराओं को
अनंत आलिंगन में समेट लेगा।

किसी अगले सृष्टि-प्रभात की प्रथम किरण में,
हम एक ही तरंग बनकर
उस अद्वैत तट को छुएँगे,
जहाँ भेद का नाम नहीं,
और बिछोह की छाया भी नहीं।

वहाँ-
न तुम रहोगे, न मैं,
बस एक अनंत प्रवाह,
जो ब्रह्म की गोद में विलीन होकर
अपने ही स्रोत का शाश्वत सत्य बन जाएगा।

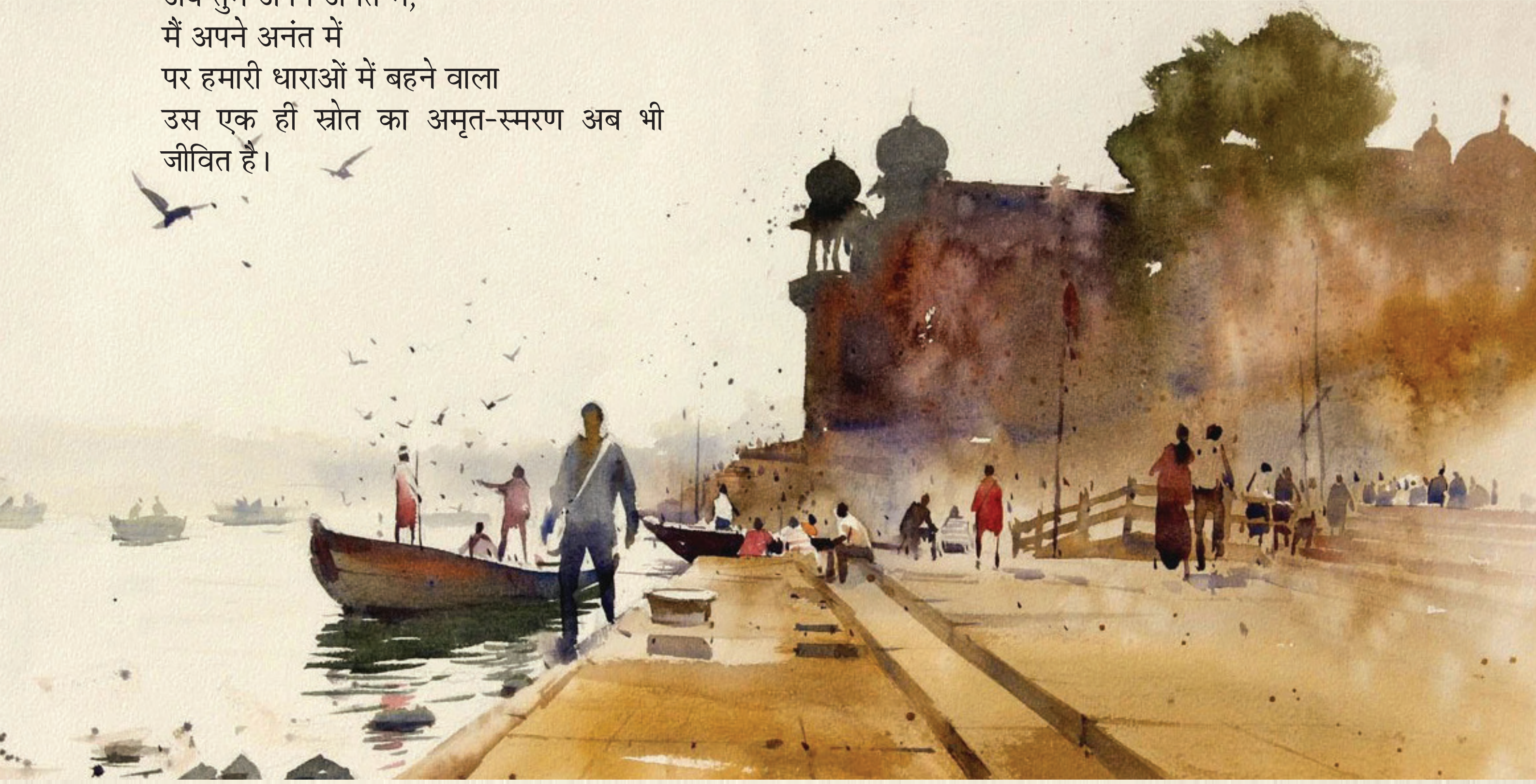

जवाहरलाल नेहरू सीमा शुल्क भवन प्रयोगशाला- एक दृष्टि में

डॉ. विजय वर्धन पाण्डेय
सहायक रसायन परीक्षक

"सही जांच-सही रिपोर्ट-सही कर संचय-राष्ट्र सेवा में तत्पर"

जवाहरलाल नेहरु सीमा शुल्क भवन (कस्टम हाउस) प्रयोगशाला, न्हावा शेवा, केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला, नई दिल्ली के अन्तर्गत आने वाली एक प्रतिष्ठित प्रयोगशाला है। वर्ष 1996 में यह प्रयोगशाला न्हावा शेवा में जवाहर लाल नेहरु सीमाशुल्क भवन में स्थानांतरित हुई थी। उस समय इस प्रयोगशाला के प्रभारी श्री बी. एच. खवास थे। इसी प्रयोगशाला में संयुक्त निदेशक के पद पर श्री वी. सुरेश भी अपनी सेवाएँ दे चुके है, श्री वी. सुरेश वर्तमान में केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला के निदेशक के पद पर कार्यरत है।

वर्तमान में न्हावा शेवा प्रयोगशाला के प्रभारी डॉ पार्थसारथी करमाकर है तथा डॉ करमाकर के अलावा 2 रसायन परीक्षक ग्रेड-I, 4 रसायन परीक्षक ग्रेड-II, 9 सहायक रसायन परीक्षक, 13 रसायन सहायक, 4 प्रयोगशाला सहायक ग्रेड-II, 14 प्रयोगशाला सहायक ग्रेड-III भी प्रयोगशाला में कार्यरत है।

प्रयोगशाला का मुख्य उद्देश्य, सीमा शुल्क और केंद्रीय उत्पाद शुल्क के टैरिफ से संबंधित सभी तकनीकि मामलों में भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के उत्पाद और सीमा शुल्क विभाग के केंद्रीय बोर्ड कि सहायता करना है। इसमें केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क टैरिफ, आयात और निर्यात व्यापार नियंत्रण नीति और ड्रा-बैक के उद्देश्यों आदि के तहत वर्गीकरण के उद्देश्य के लिए विभिन्न व्यापारिक वस्तुओं के नमूनों (सैम्प्ल्स) के विश्लेषण में सीमा कार्य शुल्क और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के क्षेत्र निर्माण में सहायता करना प्रमुख है। औषधीय और शौचालय सामग्री अधिनियम के अन्तर्गत उनके वर्गीकरण के लिए एथिल अल्कोहल और स्वापक औषधियों वाली औद्योगिक वस्तुओं के वर्गीकरण में उत्पाद और सीमा शुल्क के केन्द्रीय बोर्ड कि सहायता करना आदि।

प्रयोगशाला में आए हुये प्रत्येक सैंपल का शीघ्रता से निष्पादन हो, साथ ही यह भी ध्यान दिया जाता है कि रिपोर्ट मे कोई त्रुटि ना हो। यहाँ विभिन्न प्रकार के सैंपल जांच के लिए आते है, जैसे कि पैट्रोलियम उत्पाद, खनिज, रासायनिक उत्पाद, अल्कोहल और उनके उत्पाद, दवाइयाँ, कपड़े, खाने के उत्पाद, उर्वरक इत्यादि। इसी प्रकार कई ऐसे खनिज उत्पाद ऐसे भी होते है, जिनमें कैडमियम, लेड इत्यादि हानिकारक तत्व भी मौजूद होते हैं, भारत सरकार द्वारा इन हानिकारक तत्वों कि एक तय सीमा निर्धारित कि गयी है, इसलिए इस बात का विशेष ध्यान दिया जाता है कि खनिज में यह हानिकारक तत्व तय सीमा में है कि नहीं, अन्यथा तय सीमा से अधिक वाले सैम्प्ल्स (samples) को अलग रिपोर्ट (नेगेटिव रिपोर्ट-डिफ़र) करके रिपोर्ट दी जाती है, इसी प्रकार क्या किसी पैट्रोलियम उत्पाद मे मिलावट है या उसकि प्रकृति कुछ और है। इसी प्रकार कपड़े के भी सैंपल जांच के लिए आते है, हम यह देखते है कि सैंपल किस प्रकार के टेक्सटाइल मेटेरियल से बना है (कॉटन, रयोन, पॉलियस्टर इत्यादि)। एथिल अल्कोहल के सैम्प्ल्स में यह ध्यान दिया जाता है कि उसमे डीनेचरड (denatured) कम्पाउण्ड मिलाया गया है या नहीं और कितनी मात्रा में। हमारे जांच का यही उद्देश्य है कि सैंपल क्या है, वह किन किन पदार्थों से मिलकर बना हैं, क्या सैंपल का संघटन (composition) वही है जो विवरण (description) में दिया है या कुछ और, किसी सैंपल में कोई हानिकारक तत्व तो नहीं जो पर्यावरण के लिए नुकसानदेह हो, साथ ही जांच मे यह भी देखा जाता है कि क्या सैंपल सही टैरिफ कैटेगरी में है या नहीं, जिससे सैंपल से सही टैक्स का भुगतान हो सके और सीमाशुल्क भवन, देश को सही राजस्व कि प्राप्ति हो।

प्रयोगशाला में GCMS, GC, GC-Pyrolysis, LCMS, HPLC, HPTLC-MS, FTIR, EDXRF, Polarimeter, N2 Analyzer, UV, Karl Fisher Titrator, GCV, Auto-titrator, AAS, Metal Analyzer इत्यादि अत्याधुनिक मशीनें है, जिनसे प्रयोगशाला में प्राप्त हुए सभी सैंपलों का शीघ्रता से त्रुटिरहित निष्पादन किया जाता है।

प्रयोगशाला ने वित्तीय वर्ष 2024-2025 में कुछ विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की है, जो निम्नवत है–

क्रम संख्या	वित्तीय वर्ष 2024-2025 के वह महीने जिसमे अत्यधिक सैंपल प्रयोगशाला में प्राप्त हुए	प्रयोगशाला में प्राप्त हुए सैंपल की संख्या	प्रयोगशाला से रिपोर्ट (निष्पादित) हुए सैंपलों की संख्या (बैक लॉग सहित)
1.	अप्रैल, 2024	1315	1148
2.	मई, 2024	1278	1302
3.	जून, 2024	1269	1352
4.	जुलाई, 2024	1215	1219

उपरोक्त वर्णित तालिका से यह स्पष्ट है कि प्रयोगशाला में विगत महीनों में अत्यधिक सैंपल जाँच के लिए आये और अधिक से अधिक सैंपलों की त्रुटिरहित जाँच करके रिपोर्ट का निष्पादन किया गया, इन कार्यों से सीमाशुल्क भवन का राजस्व भी बढ़ा। इस वित्तीय वर्ष (2025-2026) में भी लगभग 4500 से भी अधिक सैम्प्ल्स का निष्पादन किया जा चुका है।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर न्यू कस्टम हाउस (New Custom House) बेलार्ड एस्टेट, मुंबई प्रयोगशाला से आए हुये सैंपलों की भी जांच की जाती है।

प्रयोगशाला के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों का योगदान अत्यंत प्रशंसनीय है, जिनके अथक प्रयासों से यह प्रयोगशाला नवीन आयामों को छूने में सफल है और भविष्य में भी तत्पर रहेगी।

गजल

॥ बेशक ॥

लक्ष्मी कुमारी
अधीक्षक (नि.)

बेशक मैंने तुझे याद नहीं किया,
पर हाँ, तुझे भूलने की कोशिश भी नहीं की !

बेशक मैंने तेरे इश्क़ में ,
खुद को नहीं बरबाद किया
पर हाँ, मैंने तेरे बिन ख़ुद को आबाद
करने की कोशिश भी नहीं की !!

बेशक मैंने तेरे लिए चाँद-तारे नहीं तोड़ लाय।
पर हाँ, तेरे बिन चाँद तारों
को पाने की कोशिश भी नहीं की!!

बेशक मैं तुझे दुनिया नहीं दिखा पाया,
पर हाँ तेरे बिन, दुनियां देखने की कोशिश भी नहीं की !!

बेशक़ मैं तुझे अपनी चाहत का
इंतेहा नहीं बता पाया
पर हाँ, मैंने तुझसे छुपाने की कोशिश भी नहीं की !!

बेशक मैंने तुझे याद नहीं किया,
पर हाँ, तुझे भूलने की कोशिश भी नहीं की !

आलेख

इंस्टैंट लाइफ

निखिल गुप्ता
कार्यकारी सहायक

आज की दुनिया तेज़ी से भाग रही है। सबको सबकुछ तुरंत चाहिए, इंस्टैंट मैसेज, इंस्टैंट फूड, इंस्टैंट फेम और यहाँ तक कि इंस्टैंट सफलता भी। हम चाहते हैं कि जैसे मोबाइल में बटन दबाते ही रील्स चल जाती है, वैसे ही जीवन में भी बटन दबाते ही सपने पूरे हो जाएँ। लेकिन सच्चाई यह है कि जीवन कोई 'टू मिनट नूडल्स' नहीं है, यह एक धीमी आँच पर पकने वाली रसोई है।

कभी ध्यान दिया है? आम का पेड़ सालों की धूप, बारिश और मौसमों को झेलने के बाद फल देता है। अगर उसे तुरंत फल देना होता तो शायद उसका स्वाद भी उतना मीठा न होता। उसी तरह, सफलता का स्वाद भी तभी मधुर लगता है जब वह संघर्ष और धैर्य से कमाया गया हो।

एक विद्यार्थी की तरह सोचिए, परीक्षा से एक हफ़्ता पहले पूरी किताब रटकर टॉपर बनने की चाहत रखना आसान है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि जो रोज़ पढ़ता है, वही असली टॉपर बनता है। जीवन का नियम है:

"जो बोओगे, वही काटोगे, लेकिन समय लगेगा।"

इतिहास भी यही सिखाता है। अर्जुन ने भी महाभारत के मैदान में पहले निराश होकर सबकुछ छोड़ने की सोची थी। लेकिन श्रीकृष्ण ने उसे समझाया कि विजय का रास्ता कर्म और धैर्य से होकर ही जाता है। अगर अर्जुन अधीर होकर हार मान लेता, तो गीता का उपदेश और उसका गौरवशाली इतिहास कभी जन्म ही न लेता।

इंस्टैंट लाइफ की चाहत हमें अक्सर अधीर बना देती है। जब चीज़ें तुरंत नहीं मिलतीं तो हम तनाव, डिप्रेशन और कभी-कभी हार मानने तक पहुँच जाते हैं। पर असली बुद्धिमानी यही है कि हम समय की गति को स्वीकार करें। फूल खिलने में समय लेता है, सूरज को उगने में समय लगता है और इंसान को महान बनने में भी समय लगता है।

आलेख

"कस्टम ऑडिट करने की चरणबद्ध प्रक्रिया"

संगीता अधिकारी
सहायक आयुक्त

1. दायरा और उद्देश्य तय करें

उद्देश्यः ऑडिट क्यों करना है? (जैसे अनुपालन जाँच, जोखिम कम करना, कार्यकुशलता बढ़ाना, धोखाधड़ी रोकना)।

दायराः कौन-कौन से विभाग, प्रक्रिया या गतिविधियाँ ऑडिट में शामिल होंगी।

2. ऑडिट की योजना बनाएँ

ऑडिट प्लान तैयार करेंः समयसीमा, संसाधन, जिम्मेदार टीम, पद्धति।

आयुक्तालय प्रमुख से अनुमोदन प्राप्त करें।

जोखिम पहचानेंः उच्च-जोखिम या संवेदनशील क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दें।

चेकलिस्ट तैयार करेंः उद्देश्य के अनुसार प्रश्न/बिंदु।

संचार करेंः संबंधित विभागों को पहले से सूचित करें।

3. जानकारी एकत्र करें

दस्तावेज़ जाँचः नीतियाँ, नियमावली (SOP), पिछले ऑडिट रिपोर्ट, वित्तीय रिकॉर्ड (Balance Sheet 5 years), प्रदर्शन रिपोर्ट आदि।

डेटा विश्लेषणः पैटर्न, असमानता या जोखिम संकेत पहचानें।

नियंत्रण समझेंः मौजूदा आंतरिक नियंत्रण कैसे काम कर रहे हैं।

4. फील्डवर्क करें

साक्षात्कारः कर्मचारियों/प्रबंधकों से बातचीत।

अवलोकनः सीधे गतिविधियों को देखना।

परीक्षणः नमूना जाँच, लेन-देन की पुष्टि, मिलान आदि।

प्रमाण इकट्ठा करेंः पर्याप्त, प्रामाणिक और प्रासंगिक साक्ष्य।

5. निष्कर्षों का मूल्यांकन

मानकों से तुलनाः कहाँ-कहाँ कमी है।

जोखिम स्तरः उच्च, मध्यम, निम्न प्राथमिकता।

मूल कारण विश्लेषणः समस्या क्यों हुई (सिस्टम की कमी, मानव त्रुटि, निगरानी की कमी)।

6. रिपोर्ट तैयार करें

रिपोर्ट का ढाँचाः उद्देश्य और दायरा

पद्धतिः प्रमुख निष्कर्ष जोखिम और उसका प्रभाव

सुधार के सुझाव

संतुलनः सकारात्मक बिंदु और कमियाँ दोनों दिखाएँ।

सरल भाषाः ताकि प्रबंधन आसानी से समझ सके।

7. फॉलो-अप करें

एक्शन प्लानः प्रबंधन के साथ सुधारात्मक कदम, जिम्मेदार व्यक्ति और समयसीमा तय करें।

निगरानीः सुधार लागू हुआ या नहीं, इसकी समय-समय पर जाँच।

8. कस्टम ऑडिट का उद्देश्य केवल गलती निकालना नहीं है, बल्कि मूल्यवर्धन (Value Addition) करना है—यानी जोखिम घटाना, नियंत्रण मज़बूत करना और दक्षता बढ़ाना।

कविता

दिशाओं से दशाओं तक

टीना छाबड़ा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

घर सिर्फ ईंट और पत्थर का मेल नहीं,
यह तो ऊर्जा और दिशा का मेल है।

घर सिर्फ दीवारों का रंग नहीं,
यह तो मन की तरंग है।

घर सिर्फ छत और चौखट नहीं,
यह तो जीवन की आभा है।

घर ईंटों का ढेर नहीं,
सपनों का एक साज है,
जहाँ हर कोना गाता है,
जहाँ हर दीवार आवाज़ है।

दीवारें जब सही हों,
तो रिश्ते भी सही चलते हैं,
द्वारों की दिशा जब सही हों,
तो अवसर भी सही मिलते हैं।

जब खिड़की से किरण आती है,
आँगन को सुनहरा कर जाती है,
जब हवा परदे छूकर,
मन की थकान मिटाती है।

यही है वास्तु का पहला स्वर,
घर से जुड़े हुए हैं ईश्वर।

जीवन है पंच तत्वों का योग—
पृथ्वी देती ठोस आधार,
धरती पर मिलता जीवन का सार।
जल बहता समृद्धि के संग,
रसधार बने दिल के रंग।
अग्नि देती उत्साह की उमंग,
जीवन को देती ऊर्जा की तरंग।
वायु लाती ताज़गी खास,
जीवन को देती अनोखी साँस।
आकाश दिलाए अनंत विस्तार,
यही पंच तत्व हैं जीवन का सार।
पंच तत्व जब संतुलित हों,
तो जीवन भी संतृप्त होता है।

दीपक की लौ अंधेरा हर ले,
दर्पण किरणों को बिखरा दे।
कोनों का जब बोझ हटे,
मन का भारीपन भी घटे।

एक नवदंपति का घर उदास,
नींद न आए, मन निराश।
बिस्तर की बस दिशा बदली,
खिड़की पर जल की गगरी रखी।
कुछ ही दिनों में मुस्कान आई,
दीवारें भी हँसने लगीं भाई।

घर अगर बिखरा हो तो,
सोच भी बिखर जाती है,
साफ-सुथरे घर की खुशबू
आत्मा तक उतर जाती है।

एक था परिवार,
बड़ा सा घर,
कमरे थे अनेक,
कोई नहीं था नेक,
रातों में लगता सोना भारी,
दिन में सबको निद्रा आनी,
दिशा की थी सब मेहरबानी।

घर को जब संतुलित किया,
मंदिर उत्तर पूर्व और
चूल्हा दक्षिण-पूर्व किया,
और दीवारों को जब हल्का क्रीम किया।

कुछ ही दिनों में बदले स्वर,
हवा ने भी मोड़ लिया,
बच्चों की हँसी ने आँगन में,
परिवार का मन मोह लिया।

मेहनत तो सभी करते हैं,
पर सफलता सब को कहाँ मिलती,
कारण केवल कर्म नहीं,
समय को दिशा नहीं मिलती।

दीपक अगर लड़े हवा से,
अंततः वह बुझ जाएगा,
सहारा ले यदि हवा का,
जग रौशन वो कर जाएगा।

यही है वास्तु का रहस्य—
जब स्थान सही हो,
तो प्रयास भी फलते हैं,
और जीवन भी खिल उठता है।

ऋषियों ने कहा था—
"दिशाएँ सिर्फ दिशाएँ नहीं,
ये तो देवताओं के द्वार हैं।"
उत्तर में बहता हो पानी,
सुख समृद्धी को नहीं हो हानि।
पूर्व हल्का, दक्षिण भारी,
कोई समस्या घर नहीं आनी।
पश्चिम में हो अगर बोझ,
अवसर के फिर कहाँ योग।

पूर्व से उगता है विद्वान,
ज्ञान का देता वरदान।
उत्तर से बहती सर्द हवाएँ,
सुख समृद्धि घर में लाएँ।

इसलिए घर की हर दिशा,
जीवन की हर दशा को बदल देती है।
जहाँ हर दिशा शुभ हो जाती,
जीवन की धारा सुधर जाती।

घर न केवल ठिकाना हो,
जीवन का तराना हो।
यही है वास्तु की पहचान,
संगीत-सा इसका विधान।

वास्तु है जीवन जीने की कला,
मन और प्रकृति का मधुर मिला।
संतुलन ही इसका सच्चा सार,
यही है सुख-शांति का आधार।

जेएनसीएच न्हावा शेवा में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एवं कार्यस्थल पर महिला सुरक्षा संबंधित कार्यशाला का आयोजन

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2025 का आयोजन

सीमाशुल्क मुंबई अंचल II में सतर्कता जागरूकता अभियान 2024 का आयोजन

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा राजस्व विभाग के महत्वपूर्ण कार्यालयों में से एक है। यह भारत को सबसे ज्यादा राजस्व देने वाला केंद्र है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मुंबई अंचल II में भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार सतर्कता जागरूकता अभियान, 2024 का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्देश्य शासकीय कार्यों में सतर्कता को सर्वोपरि रखते हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चलाना है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान, "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" थीम के तहत 28 अक्टूबर, 2024 से 04 नवंबर, 2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2024 का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्घाटन माननीय मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क अंचल II के द्वारा किया गया जिनके नेतृत्व में सभी अधिकारियों ने सत्यनिष्ठा की शपथ ली।

थीम का प्रभावी रूप से प्रचार-प्रसार करने के लिए सम्पूर्ण सीमाशुल्क भवन एवं बाहरी क्षेत्र में स्थित सीएफएस में "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" विषय को रेखांकित करने वाले पोस्टर और बैनर प्रसारित किए गए। जागरूकता सप्ताह के दौरान दिनांक 30.10.2024 को "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" विषय पर हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के विभिन्न अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

स्वच्छता पखवाड़ा, वर्ष 2024-25

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन में "स्वच्छता ही सेवा" अभियान 17 सितंबर 2024 से 02 अक्टूबर 2024 तक मनाया गया। एसएचएस 2024 का उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से जन आंदोलन पैदा करना और "स्वच्छ भारत मिशन" के कार्यान्वयन को गति प्रदान करना है। आयुक्त महोदय-जनरल के नेतृत्व में सभी अधिकारियों ने उरण स्थित पीरवाड़ी बीच में सघन स्वच्छता अभियान चलाया एवं व्यवस्थित रूप से कचरे का निस्तारण किया।

बच्चों का कोना

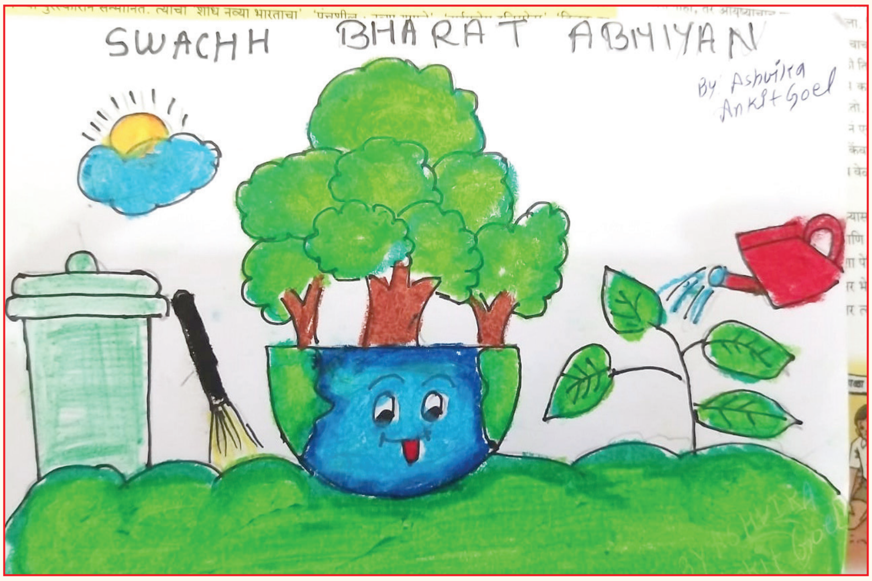

अश्विका अंकित गोयल,
सुपुत्री श्री अंकित गोयल,
कर सहायक

अर्मिता सिंह,
सुपुत्री अमित सिंह,
कार्यकारी सहायक

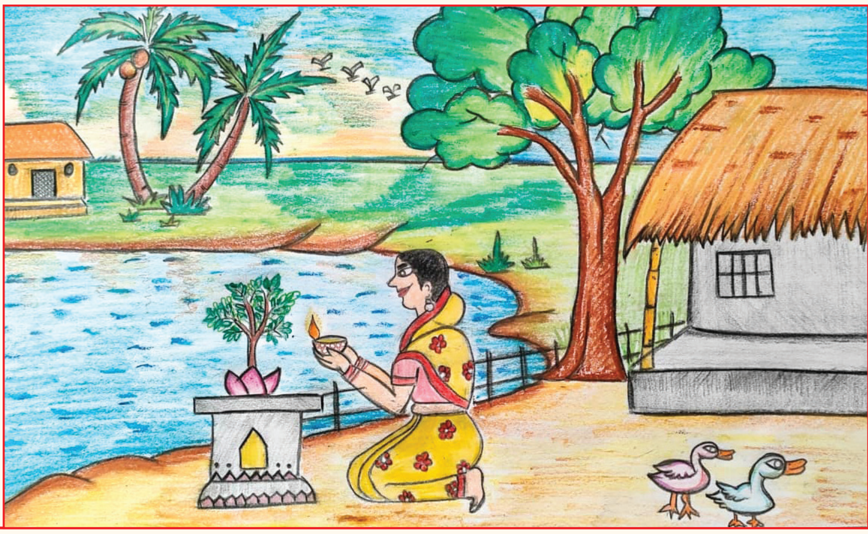

शानवी प्रसाद
सुपुत्री श्री चंदन प्रसाद
अधीक्षक (निवारक)

नव्य श्रीवास्तव
सुपुत्र श्री नवीन श्रीवास्तव,
अधीक्षक (निवारक)

वानी सोनी,
सुपुत्री श्री नीरज सोनी,
अधीक्षक (निवारक)

समर्थ बिशोई,
सुपुत्र श्री प्रदीप बिशोई,
कार्यकारी सहायक

यशस्वनी मिश्रा
सुपुत्री श्री वेंकटेश मिश्रा
अधीक्षक (निवारक)

गौरांग अवस्थी
सुपुत्र श्री आनन्द अवस्थी
अधीक्षक (निवारक)

पूर्वी भाकर
सुपुत्री श्री विकास भाकर
अधीक्षक (निवारक)

सीमाशुल्क मुंबई अंचल II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

तालुका- उरण, जिला- रायगड, महाराष्ट्र - 400 707

मुद्रण : नेहा कॉपी सेंटर, मुंबई Mob : 98332 01535 E mail : nehaccm@gmail.com